



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 4
PART II—Section 4

प्रधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY



सं. १८]

नई दिल्ली, बुधवार, १२ नवम्बर १९८६/कार्तिक २१, १९०८

No. 18] NEW DELHI, WEDNESDAY, NOVEMBER 12, 1986/KARTIKA 21, 1908

इस भाग वर्षे भिन्न पृष्ठ संख्या वी जाती हैं जिससे यह पृष्ठ संख्या संकलन के लिए इस पर लाभ होता है।

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

राजा भूमिकालय

नई दिल्ली, १२ नवम्बर, १९८६

प्रधिकार संख्या

का. नि. ना. 20(अ)।—केंद्रीय सरकार, तट रक्षक भविनियम, १९८६ (१९८६ का ३०) की धारा १२३ की उपधारा (१) और उपधारा (२) के बाब्त (य) और (ग) द्वारा प्रस्तु अधिकारीयों का प्रयोग करने वाले, निम्नलिखित नियम बनाते हैं, प्रथमतः—

भाग १

प्रारंभिक

१. संक्षिप्त नाम और प्रारंभ—(१) इन नियमों का संक्षिप्त नाम तट रक्षक (सेवा की एवं) नियम १९८६ है।

(२) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

२. परिमाणान्—इन नियमों में अब तक कि संदर्भ से अन्यथा अधिकारी न हो,—

(क) "भविनियम" से तट रक्षक भविनियम, १९८६ (१९८६ का ३०) अधिकृत है।

(ख) "कूविक" से नाविक अधीक्षी का भारताभ्रक प्रकाशकीय अधिकृत है।

(प) "तट रक्षक भेत्र" से निम्नलिखित अधिकृत है,—

(i) पश्चिमी तट रक्षक भेत्र, जिसमें गुजरात, महाराष्ट्र कर्नाटक, केरल, राज्यों और सोवा, दमन और दीव तथा लक्ष्मीप के संबंध राज्य भेत्रों के तटीय भेत्रों के साथ-साथ भारत के तटीय भेत्र और समुद्री भेत्र समाविष्ट है।

(ii) पूर्वी तट रक्षक भेत्र, जिसमें आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, तमिल-नाडू, पश्चिमी बंगाल राज्यों और पश्चिमांचली संबंध राज्य भेत्र के तटीय भेत्रों के साथ-साथ भारत के तटीय भेत्र और समुद्री भेत्र समाविष्ट हैं।

(iii) अंदमान और निकोबार द्वीप समूह का तट रक्षक भेत्र जिसमें अंदमान और निकोबार द्वीप समूह सब राज्यभेत्र के तटीय भेत्रों के साथ-साथ भारत के तटीय भेत्र और समुद्री भेत्र समाविष्ट हैं।

भाग २

सेवा की छात्र

मध्याय १

अधिकारी

३. नियुक्ति—(१) केंद्रीय सरकार एसे व्यक्तियों को जिन्हें वह उपयुक्त समझे, तटरक्षक में अधिकारी के रूप में नियुक्त कर सकेंगी,

प्रधिकारियों की भर्ती विभिन्न ब्रह्मणे के प्रधिकारियों के भर्ती नियमों के अनुसरण में भी जायेग।

(2) भर्ती की प्रक्रिया वह होगी जो केन्द्रीय सरकार द्वारा समय-समय पर प्रबोधित की जाए।

4. स्थानान्तरण—(1) सेवा में प्रारम्भिक नियुक्ति के पश्चात् प्रधिकारी, महानिवेशक द्वारा या विनियोग सेवा के भीतर स्थानान्तरण का दायी होगा। प्रधिकारियों को, महानिवेशक के भौतिक या लिखित भावेश द्वारा नियुक्त किया जाएगा।

(2) प्रधिकारियों को नियुक्ति का व्यवहार करने या उसके इकार करने के लिए अनुशासन नहीं किया जाएगा।

(3) किसी नियुक्ति को रद्द करने के लिए प्रावेदन परि प्रावेदन कारणों के बिना जिनका, पूर्ण रूप से विविध गलती किया जाएगा, नहीं किए जाएंगे। परि कोई प्रधिकारी ऐसा कोई प्रावेदन करता है तो उसका कमान प्राक्षिप्त या उच्चतर प्राविकारी यह क्षमत करेगा कि वह प्रावेदन को बंदूर करने की विकारित करता है या नहीं।

(4) विविष्ट प्रावेदन या स्थान में नियुक्ति के लिए प्रावेदन परि प्रावेदन को प्राप्तिशील समझा जाएगा और उन्हें महानिवेशक को प्रदेशित नहीं किया जाएगा। किन्तु यदि दो प्रधिकारी प्रपत्ती नियुक्तियों का प्रावान-प्रदान करने की वांछा करें और उसके पर्याप्त कारण लिए गए हों तो नियुक्तियों के प्रावान-प्रदान के प्रावेदन संबंधित पोतों के कमान आकिसरों द्वारा यह क्षमत करते हुए प्रस्तुत किए जा सकेंगे कि उन्हें उस अनुरोध के अनुपालन पर कोई आवेदन नहीं है, किन्तु यदि उन्हें कोई आवेदन है तो उन्हें विविष्ट किया जाएगा।

(5) कमान प्राक्षिप्त इस बात का ध्यान रखेगा कि पोत से किसी प्रधिकारी की नियुक्ति या उसके स्थानान्तरण के लिए और न ही अनु-प्रस्तुति छुट्टी छोड़ द्वारा उसका वापस आना अनुश्रितभाव्य ही जाए कोई प्रावेदन तथा ताक प्रहृण नहीं किया जाएगा जब तक वह प्रावेदन पर यह प्रमाणित नहीं कर देता कि वह ऐसे प्राक्षिप्त के आवरण से संतुष्ट है। नियुक्ति या स्थानान्तरण के प्रत्येक प्रावेदन पर वह भी प्रमाणित करेगा कि किसी प्रवक्तार के अलिङ्गनस्वरूप पोत से किसी प्रधिकारी को हटाने के लिए प्रावृत्ति नहीं किया गया है।

(6) यद्यपि किसी प्रधिकारी का प्रावरण ऐसा न भी हो कि तट रेलक स्थायालय द्वारा कोई अनुशासनिक कार्रवाहों की जाए, किन्तु किरणी उसे उस नियुक्ति के लिए जिसको वह धारण करता है, उदाहरणार्थ प्रतिक्रिया योग्यता व्यक्तिगत क्लासिटी या प्रावरण में कभी के कारण अनुप्रयुक्त समझा जाएगा। जहां उसकी कमिया उसके कमान प्राक्षिप्त के उसकी मुक्ति के लिए प्रावेदन करने के लिए धारण करे, वही प्रावेदन महानिवेशक को भेजने से पूर्व प्रधिकारी की पूर्णतः सूचित किया जाएगा। प्रावेदन के साथ प्राक्षिप्त की रिपोर्ट लगी होगी या प्रावेदन प्रधिकारी की रिपोर्ट में समाविष्ट होगा और रिपोर्ट के उन प्रतिकूल घातों को जिनको प्रधिकारी की सूचित किया गया है, ताक स्थाहों से रेकारित किया जाएगा। प्रतिकूल घिन्गों को, महानिवेशक द्वारा समय-समय पर जारी किए गए अनुदेशों के अनुसरण में, प्रधिकारी की विवाद्या जाएगा।

5. उपलब्ध न रहने पर प्रधिकारियों द्वारा रिपोर्ट किया जाना—जब कोई प्रधिकारी किसी कारण से, जाहे जो भी ही, नियोजन के लिए तकाल उपलब्ध नहीं है तब वह प्राविक घैतों के माध्यम से महानिवेशक की जानकारी के लिए उस तथ्य की रिपोर्ट करेगा।

6. सेवा का दायित्व—(1) सभी प्रधिकारी, सेवा के किसी अन्य सशाल बल में जो सरकार द्वारा नियोजित की जाए सेवा के लायी होये। ऐसी सेवा के लिए ज्यवन करते समय स्वयं सेवकों को प्रधिमानता दी जाएगी, किन्तु यदि प्रधेशित संघर्ष में समुक्ति स्वयं सेवक नहीं आते हैं तो किसी अन्य नियुक्ति के प्रधिकारियों को लिया जाए सकेगा।

(2) तथी प्रधिकारी, जिसी विविध या अन्य नियुक्ति में, बहस्त-में प्रधिकारी के विवेदक में, जैसा कि केन्द्रीय सरकार द्वारा नियोजित किया जाए, सेवा के लिए वायी होंगे।

7. कमान आक्षिप्त को हटाया जाना—(1) किसी देशी पोत के कमान में किसी प्रधिकारी को, जिसमें उसे समुक्ति द्वय से नियुक्त किया जाता है, उसमें इसके पश्चात् उपर्युक्ति के सिवाय, किसी उच्चतम प्रधिकारी की द्वारा, महानिवेशक के सूची अनुसारन के बिना वही हटाया जाएगा।

(2) जहां परिस्थितियों ऐसी हों कि पोत की कमान से किसी प्रधिकारी को हटाया, सोक सेवा के लिए अति-आवश्यक हो जाए और इतना अनिवार्य हो कि उसका महानिवेशक को पूर्व नियोग करना अनुपात न हो सके वही यह महानिवेशक जिसके प्रधीन कमान आक्षिप्त के द्वारा कर रहा है, महानिवेशक को तकाल परिस्थितियों की रिपोर्ट करते हुए प्रधिकारी को हटाने का विवेद दे सकेगा।

(3) जहां किसी पोत को कमान में कोई सिविल रिवित होती है वही संबंधित महानिवेशक महानिवेशक की परिस्थितियों की रिपोर्ट करते हुए ऐसे पोत की कमान में किसी उपयुक्त प्रधिकारी को नियुक्त कर सकेगा।

(4) उपनियम (2) और (3) के अधीन की गई कोई नियुक्ति तब तक अनंतिम होगी जब तक महानिवेशक से अंतिम विवेद ग्राप्त नहीं हो जाए।

8. स्थानान्तरण और स्थानान्तरण—स्टेट रेलक घोटों के कमांडर आपवादिक परिस्थितियों में खेत के भीतर कमान आक्षिप्त से भिन्न प्रधिकारियों के स्थानान्तरण का प्रावेदन कर सकेंगे। ऐसे स्थानान्तरणों की रिपोर्ट तुरंत महानिवेशक को दी जाएगी।

9. प्रतिक्रिया—(1) सेवा में नियुक्त होने पर प्रधिकारी, महानिवेशक द्वारा प्रावधारित प्रतिक्रिया का पाइयकता प्राप्त करेंगे।

(2) चयन किए गए प्रधिकारी, सेवा के लिए विवित किए गए विविष्ट पाइयकतों की प्राप्ति करने के लिए पाल होंगे।

10. प्रोलंति—(1) विभिन्न रेलों के लिए प्रोलंति उस प्रकार की जाएगी जो, प्रस्तेक रेल के भर्ती विविधों में विविष्ट है। गई है।

(2) जैडजा, प्रहृताएं, प्रोलंति की प्रक्रिया और विभागीय प्रोलंति का गठन केन्द्रीय सरकार द्वारा समय-समय पर यथा प्रधारापित होंगी।

(3) प्रधिकारियों को, यथा प्राक्षिप्ति भर्ती/अर्हताओं के पूरा करने पर और किसी विविष्ट रेल में रिक्तियों की उपलब्धता के अधीन रहते हुए, भगवी उच्चतर रेल में प्रोलंति किया जाएगा।

आधार 2

नामांकित व्यक्ति

11. भर्ती—महानिवेशक, व्यक्तियों के विभिन्न प्रवक्तारों के लिए विविष्ट भर्ती विविधों के विवेदक सेवा के लिए अपेक्षित नामांकित व्यक्तियों को भर्ती कर सकेगा।

12. सेवा के लिए वाक्यित्व—(1) सभी नामांकित व्यक्ति, जैसा कि महानिवेशक द्वारा नियोजित किया जाए उसके किसी प्रध्य संसाध बैल में सेवा के लिए वायी है। ऐसी सेवा के लिए चयन करते हुए स्वयं सेवकों को व्यक्तिमानता दी जाएगी। यदि प्रधेशित संघर्ष में व्यय सेवक नहीं आते हैं तो व्यक्तियों को स्थानान्तरित किया जा सकेगा। जैसे महानिवेशक द्वारा आवश्यक समझा जाए।

(2) सभी नामांकित व्यक्ति किसी सिविल या अन्य नियुक्ति में, भारत में या विवेदक में, जैसा कि महानिवेशक द्वारा निर्देश किया जाए, सेवा के लिए वायी होंगे।

13. नामांकित व्यक्तियों का स्थानान्तरण—(1) नामांकित व्यक्ति भर्ती भीतर स्थानान्तरण के लिए जाएगी।

(2) नामिक व्यूरो का भारताधिक भविकारी, नामाकित व्यक्तियों के स्थानान्तरण आदेश आरोपी करने और सभी नामाकित व्यक्तियों के ठिकानों को संग्रहीत और अपत्तक रखने के लिए उत्तरदायी होता।

(3) किसी भी नामाकित व्यक्ति के ईक पर उसके घर्षण पोत में स्थानान्तरण के कारण अतिकूल ब्रवाब नहीं पड़ता, भले ही उस पोत में विसमें उसका स्थानान्तरण किया जाया है, कोई समतुल्य ईक न हो। ऐसी व्यापारों में, व्यक्ति अतिरिक्त रूप में रखा जाएगा।

14. पोत पुस्तिका से सेवान्वयिता—(1) कोई भी व्यक्ति उपनियम (2) में उल्लिखित कारणों के लिए, उस महानिदेशक या उस महानिरीक्षक के प्राविकार के विना विनके अधीन वह सेवा कर रहा है, पोत पुस्तिका से सेवान्वयित नहीं किया जाएगा।

(2) किसी नामाकित व्यक्ति को, मृत्यु, अभियंजन, स्थानान्तरण, प्रविलाप, इन्हने बद्धता या तट रक्त आपातकाल के वर्धादेश की दस्ता में इप नियम (1) में या उल्लिखित प्राविकार के विना पोत पुस्तिका के लेवोन्युक्त किया जा सकेगा।

(3) जब तक इसके विपरीत आदेश प्राप्त नहीं हो जाए, पोत पुस्तिका से सेवान्वयित सभी नामाकित व्यक्तियों को लिवेहन के लिए नामिक व्यूरो को स्थानान्तरित कर दिया जाएगा।

15. जात्याओं में स्थानान्तरण—(1) एक जाता से दूसरी जाता में स्थानान्तरण के बावेदन महानिदेशक के अनुमोदन के अधीन रहते हुए अनुकूल किया जा सकेगा।

(2) महानिदेशक स्थानान्तरण के जावेदन पर तब तक विचार नहीं करता जब तक कि—

(क) उस जाता में, विसमें स्थानान्तरण अधिकृत है, रिसिप्टों न हों, और आवेदक के लिए नहीं जाता में विलिङ्ग का प्रयोग न किया जा सके।

(ख) आवेदन का उसके कमान प्राविकार द्वारा अनुमोदन महीं कर दिया जाता और आवेदक ~~महीं~~ पात्र नहीं जाता के लिए विनियिष्ट अधिकृत अहंताएं और चिकित्सा भानक न हों।

(ग) स्थानान्तरण, सेवा के अन्यथा हित में न हो।

(3) एक जाता से दूसरी जाता में स्थानान्तरण के लिए नामाकित व्यक्तियों के आवेदन नामिक व्यूरो के भारताधिक भविकारी को, भारत महानिदेशक के बात बैठने के लिए प्रस्तुत किए जाएंगे।

(4) स्थानान्तरण उस निम्नतम ईक में होता जिसमें व्यक्ति नई जाता में साधारणतः व्रिलिंग फर्स्टे है, किन्तु उसे महानिदेशक के विवर कानूनार विधिय किया जा सकेगा।

(5) जब स्थानान्तरण चिकित्सीय कारणों से आवाधक हो, तब नामाकित व्यक्तियों को समतुल्य ईक में ऊपर उपर्यों के अधीन रहते हुए, स्थानान्तरित किया जा सकेगा।

16. व्रिलिंग—सेवा में भर्ती किए भए व्यक्ति महानिदेशक द्वारा समय-समय पर विनियिष्ट व्रिलिंग पाठ्यक्रम प्राप्त करेंगे।

17. ब्रोन्मति—(1) नामाकित व्यक्ति, कार्मिक के विविध भवनों के भर्ती नियमों के उपर्यों के अनुसार ब्रोन्मति के पात्र होंगे।

(2) व्येष्ठिता, अहंताएं, प्रोत्तवि की व्रिया प्रतिवर्तन और विभावीय ब्रोन्मति समिति का गठन, केंद्रीय सरकार द्वारा समय-समय पर प्रव्याप्त हो सकती है।

(3) नामाकित व्यक्ति, शत्रो/प्रदृष्टायां को पूरी करने पर या प्रब्लेमित और रिसिप्टों की उपब्रह्मता के अधीन रहते हुए, ब्रोन्मति किए जाएंगे।

18. रिविल प्राविकारियों द्वारा दोषसिद्धि के प्रभाव—इह किसी नामाकित व्यक्ति को किसी लिविंग प्राविकार द्वारा दोषसिद्धि किया जाता है और उसे किसी ऐसे अपराध का कोई वंड मिलता है, जिससे वर्दी, सेवा या उसको ईरित पर विनाश बर्दि भारत करता है, कलंक या अवनामी आवी है तब उसको तट रक्त मुद्रायांयों के महानिरीक्षक के पूर्व मनुमोदन से निम्नलिखित सास्ति दी जा सकेगी अर्थात्—

(क) बहुत अच्छे भावरण की निरंतरता में ब्रेक (ऐडे भावरणों में ब्रेक को लारीच दोषसिद्धि की लारीक होगी)।

(ख) अगसे मूल्यांकन के प्रबसर पर निम्नतर भावरण का प्रविनियम।

प्रधानाय 3

चरित्र और भावरण का मूल्यांकन

19. चरित्र का मूल्यांकन—(1) नामाकित व्यक्तियों को नियम 28 में विनियिष्ट भवसरों पर निम्नलिखित तिवंचों में से एक के मात्रा कमान प्राप्तिशर द्वारा चरित्र का मूल्यांकन किया जाएगा—

बहुत प्रचला के लिए V.G.

बहुत प्रचला (तारा) के लिए V.G.*

ठीक के लिए Fair

सावारण के लिए Indifferent

अप्रयोग के लिए Bad

(2) किसी नामाकित व्यक्ति के चरित्र का मूल्यांकन करते समय कमान प्राप्तिशर नामाकित व्यक्ति के कार्यालय भविकारी और प्रभावीय भविकारी से और सोशल ही किसी अन्य भविकारों से ब्रिते व्यक्ति को विशेष जानकारी हो, परमाणु करेगा। वह, व्यक्ति की सेवा पुस्तिका के पृष्ठ 28 पर कि व्रित्ति चरित्र मूल्यांकन को लारीच से समी प्रविष्टियों और उसके सामान्य चरित्र और प्रवीनिता पर पूर्णतः विचार करेगा।

(3) यहाँ किसी नामाकित व्यक्ति को घास दीप्ति से स्थानान्तरित किया गया है या 31 विवर से ठीक पहले जहाज पर चढ़े हैं, जहाँ कमान प्राप्तिशर, उसके प्रभावीयविभावीय भविकारियों के टिप्पण पहले पर और भावरण के मूल्यांकन पर टिप्पणी पर विचार करेगा।

(4) यहाँ किसी नामाकित व्यक्ति को किसी पाठ्यक्रम के अन्याय, उप से स्थानान्तरित, किया गया है, और उसे भूल पोत पर बापस भाता है, वहाँ मूल्यांकन, भूल पोत द्वारा किया जाएगा।

(5) किसी नामाकित व्यक्ति को दिया जाने वाला वास्तविक चरित्र मूल्यांकन, नियम 20 से 25 में विनियिष्ट भविकतम मूल्यांकन पहले अनुमोदित किसी निम्नतर मूल्यांकन के अधीन रहते हुए, कमान प्राप्तिशर के विवेक पर होगा। कोई मूल्यांकन जो भविकतम अनुबंध से कम है, उदाहरणार्थ “भ्राता” जब “बहुत भ्राता (तारा)” अनुज्ञा है या “ठीक” जब “भ्राता” अनुज्ञा है, तब उसे कमान प्राप्तिशर द्वारा रेकार्ड किया जाएगा जिससे कोई ऐसा प्रश्न न हो सके कि मूल्यांकन जानबूझकर किया गया है। यह ऐसे बैरेकिंग मूल्यांकनों के लिए विवर किया जाता है, तब कमान भविकर, यह द्वारा में रखेगा कि किसी बैरेकिंग मूल्यांकन में नामाकित व्यक्ति के “बहुत भ्राता” भावरण को निरुत्तरता में ब्रेक भवत्वंतित है और उसका पुरस्कार, ऐसों के प्रविष्टिकारण और प्रोभन्ति के प्रतिहृत प्रभाव पड़ता है।

(8) यदि कोई दंडादेश विधिवित किया जाता है तो मूल्यांकन प्रविनियम दंडादेश से विधिवित चरित्र मूल्यांकन पर जिसके लिए नामांकित व्यक्ति प्रमाण पात्र नहीं पड़ेगा।

(9) यदि किसी दंडादेश को कम किया जाता है, तो नामांकित व्यक्ति, कम किए गए दंडादेश को नामांकित वरित्र मूल्यांकन के लिए पात्र होते हैं।

(10) यदि किसी मुश्यमती ग्रादेश के बारी करने के पूर्व कोई दंडादेश निलंबित हो जाता है तो निलंबित दंडादेश द्वारा चरित्र पर दूर एवं प्रमाण को भी निलंबित समझा जाएगा।

(11) उपनियम (6) से (8) में अपवाद सहित मधिराम चरित्र मूल्यांकन, यिन गए दंडादेश द्वारा जापित हुए और व्यविनियम, जो बारा 103 के अधीन अपराधी द्वारा अभित पा मरकार द्वारा दी गई छूट पा जेस या निरोध से अपराधी की निमुक्ति द्वारा प्रमाणित नहीं हुई।

(12) सिविल प्राधिकारी द्वारा दोषसिद्धि पर चरित्र मूल्यांकन के लिए उच्चतर विचार नहीं किया जाएगा जब तक किसी अन्य पारिषाणिक तट रक्षक द्वारा निम्नतर चरित्र विवेचन से अनुमोदित पा नियम 18 के अनुसार किसी मिक्रो प्राधिकारी द्वारा दोषसिद्धि के पश्चात शासित नहीं दी जाती है।

20. "बहुत अच्छा" — "बहुत अच्छा" किसी भी ऐसे नामांकित व्यक्ति द्वारा, जिसका प्राप्त दूर वर्ष में अनुकूलीन रहा हो प्राप्त उच्चतम चरित्र मूल्यांकन है। अतः यह स्वतः किसी ऐसे नामांकित व्यक्ति को व्यविनियम नहीं किया जाएगा जिसका सामान्य आवार, केवल इसीने, मतोषप्रद नहीं रहा हो, क्योंकि वह बड़े दंड से बचा रहा है।

21. "बहुत अच्छा (तारा)" :— (1) "बहुत अच्छा (तारा)" का विशेषाधिकार, इससिए दिया जाता है कि जिसके कोई नामांकित व्यक्ति एक भूल द्वारा किसी अन्यथा नियन्त्रक व्यक्तिमें के कारण देश पुरुषकारों को न दें दो। कमान आकिनार, किसी नामांकित व्यक्ति के चरित्र का, उसके सेवाकाल के दौरान एक बार, इन बार के होते हुए भी कि एक अच्छे आवरण के बैज से बंजित रहने से "बहुत अच्छा" मूल्यांकन से प्रवारित हुआ था, "बहुत अच्छा (तारा)" के रूप में मूल्यांकन कर सकेगा।

(2) यह विशेषाधिकार तब तक अनुरोध नहीं होगा जब तक कमान प्राप्तिसर का, उस अपराध के अनियन्त्रित जिसके परिणामस्वरूप उपनियम (1) में वर्णित दंड हुआ था, नामांकित व्यक्ति के आवार, अवचार और कार्य से पूर्णतः समाप्त नहीं हो जाता है।

(3) जब किसी अपराधी का दंडादेश मुश्यमतों से पूर्व निलंबित कर दिया जाता है तब दोषसिद्धि होने पर, उसने भूल की है जो "बहुत अच्छा (तारा)" के विशेषाधिकार के अन्तर्गत लाने के लिए आवश्यित है और उसके परिणामस्वरूप ऐसे किसी नामांकित व्यक्ति का उस वर्ष में, जिसमें उसे निलंबित दंडादेश मिला है, चरित्र का मूल्यांकन "बहुत अच्छा" नहीं होगा।

मूल्यांकन निम्नलिखित के प्रधीन रहने हुए, "बहुत अच्छा (तारा)*" होता—

(क) पारिषाणिक आस्तियों पर दंडादेश के नियन्त्रक के प्रमाण से संबंधित उपबंध;

(ख) उपनियम (2), और उप नियम (4) के उपबंध;

(ग) वर्ष के दौरान यिए गए किसी अन्य दंडादेश के प्रमाण;

(घ) पूर्ववर्ती "बहुत अच्छा (तारा)" द्वारा प्रवारित न होने पर "बहुत अच्छा (तारा)" का व्यविनियम।

(4) ऐसा नामांकित व्यक्ति, जिसे पहले "बहुत अच्छा" से चरित्र मिला है, तब उस रियायत का हक्कदार नहीं होगा और न ही

और महानियेक के पूर्व अनुमोदन से विशेष रूप से उनमें परिवर्तन हुया है जब उस दंड के दूर होने पर उसके पश्चात और केवल तभ महानियेक के पूर्व अनुमोदन से स्वतः परिवर्तन नहीं होता है।

(5) ऐसा नामांकित व्यक्ति, जिसका पूर्व मूल्यांकन "बहुत अच्छा (तारा)" या उससे निये है विसके चरित्र का उप वर्ष के लिए मूल्यांकन किया जा रहा है जिसमें उसे नियन्त्रित दंडादेश प्राप्त हुआ है, "अच्छा" उसे उच्चतर चरित्र का मूल्यांकन नहीं होगा।

(6) "बहुत अच्छा (तारा)*" को चरित्र पर विचार करने के सभी प्रयोगों के लिए "बहुत अच्छा" के समवृत्त्य समझा जाएगा, यह मूल्यांकित करने के लिए कि कोई भी नामांकित व्यक्ति, अपनी लेखा के दोरान एक बार से प्रथिक ऐसा विशेष प्रतिकृप प्राप्त नहीं करेगा। पुरुषकार के सामने तारक लगा दिया जाएगा।

(7) किसी नामांकित व्यक्ति को वैवेकिक मूल्यांकन के रूप में "बहुत अच्छा (तारा)*" प्रशान्त नहीं किया जा सकेगा, जिसका साप्तारण व्यवहार, वर्ष के दौरान, कमान आकिनार द्वारा "बहुत अच्छा" मूल्यांकन का, समुचित आधार नहीं समझा गया है।

22. "अच्छा" — (1) नियम 21 के उपबंधों के प्रधीन रहने हुए "अच्छा" से उच्चतर चरित्र के "बहुत अच्छा" का व्यविनियम, किसी नामांकित व्यक्ति को नहीं दिया जाएगा, यदि उस व्यक्ति के दौरान जिसके लिए उसका चरित्र मूल्यांकित किया जा रहा है, उसे नियन्त्रित दंडों में से किसी दंड का व्यविनियम ही चुका है, अर्थात्:—

(क) ईक में कटीती;

(ख) एक या एक से अधिक अच्छा आवरण के बैन से वंचित रहना।

(ग) 30 दिन से कम के नियोग का कारावास का दंड।

(2) यदि किसी नामांकित व्यक्ति को, वर्ष के दौरान वो या दो या अधिक दंडादेश मिल जुके हैं, तो कमान आकिनार को इस बात का विफल होगा कि वह, यदि आवश्यक समय से तो "अच्छा" से नियन्त्रित मूल्यांकन कर सकता है। ऐसे नियन्त्रित मूल्यांकन को रेकार्डित किया जाएगा।

(3) किसी ऐसे नामांकित व्यक्ति को, जिसे अनुप्रयुक्त रूप में सेवोन्मुक्त किया गया है, "ठीक" से उच्चतर चरित्र नहीं दिया जाएगा।

23. "ठीक" — ऐसे किसी नामांकित व्यक्ति को यदि उस व्यक्ति के दौरान जिसने उपकार चरित्र मूल्यांकन किया जा रहा है, तिस विवित में से किसी में दंडादेश से बंदारिष्ट किया गया है, "ठीक" से उच्चतर चरित्र का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा, अर्थात्:—

(क) 31 दिन या उससे अधिक किसी 80 दिन से कम के लिए नियोग या कारावास या दोनों का दंडादेश।

(ख) किसी ऐसे व्यक्तिका दंड बिना, जिसके उपरे चरित्र पर प्रमाण दृष्टा हो, पदलपूति।

24. "साधारण" — ऐसे किसी नामांकित व्यक्ति का, यदि उस व्यक्ति के लिए जिसके उपकार चरित्र मूल्यांकित किया जा रहा है, नियोग या कारावास या दोनों के लिए 61 दिन या व्यक्तिका दंडादेश दिया गया है, "साधारण" से उच्चतर नहीं नहीं किया जाएगा।

25. "अर्थात्" — केवल सेवोन्मुक्त पर उस नामांकित व्यक्तियों के चरित्र को "अर्थात्" मूल्यांकित किया जा सकेगा, जिन्हें:—

(क) विशिष्टताएँ चरित्रहीन अर्थात् के लिए वीषमसिद्धि के पश्चा प्रत्यक्ष या सेवोन्मुक्त किया गया है;

(क) कठिनपय पूर्वतन "ठीक" या "सांश्वरण" चरित्र मूल्यांकन सहित पूर्ववर्ती अवधार के, लंबे अभिलेख के पश्चात अवधार के लिए पदच्युत या सेवोन्मुक्त किया गया है।

26. चरित्र मूल्यांकन का प्रमिनेश:—(1) किसी पोत की उत्तिका में नामांकित प्रतिक व्यक्ति का चरित्र उसकी सेवा पुस्तिका के पृष्ठ 23/24 में कमान आकिसर द्वारा लेखदृष्ट किया जाता, जो अबने तथा से प्रविष्टि दर्ज करता और यथा मूल्यांकित चरित्र की उसी परिवर्त पर निम्न प्रकार से अपने हस्ताक्षर करते—

(क) प्रत्येक वर्ष में 30 दिसंबर, को, केवल वहाँ के सिवाए जहाँ नामांकित व्यक्ति अभियंजन के लिए विचारण को प्रतीक्षा कर रहे हैं;

(ख) "Run" विन्दुकित किए जाने पर किन्तु यह जब उस पोत पुस्तिका से अंतिम सेवोन्मुक्ति नहीं होती और तब तक नामांकित व्यक्ति उस वर्ष के 31 दिसंबर को जिम्में उसे "Run" विन्दुकित किया गया है, अभियंजन में हो।

(ग) सेवोन्मुक्ति पर, उसके सिवाए जहाँ कारबास के दंडाधिक्षण किसी नामांकित व्यक्ति को कारबास से सीधा सिविल जीवन के लिए उभयन्तर होता है।

(2) यदि, उपनियम (1) के खंड (ख) या (ग) के अधीन व्यक्ति कोई नामांकित व्यक्ति, वर्ष के भोतर सेवा में पुनर सम्मिलित होता है, अभियंजन या सेवोन्मुक्ति पर मध्यवर्ती चरित्र का मूल्यांकन होने पर, 31 दिसंबर को किए गए चरित्र मूल्यांकन के अंतर्गत संपूर्ण वर्ष जाता है। यह वर्ष के अंत में विचारण की प्रतीक्षा करते वाला बापस आए अभियाचक को लाता नहीं होता। उनके चरित्र का मूल्यांकन 31 दिसंबर को नहीं किया जाएगा।

27. चरित्र का मूल्यांकन (1) नियम 20 से 25 द्वारा अनुदाता से भिन्न मूल्यांकनों में, मत्तानिदेशकों के मनुष्योवन से संशोधन किया जाएगा, किन्तु उसके कमान आकिसर द्वारा, नियम 19 के उपनियम (5) के अनुसरण में, सहुकार रूप से किए गए ही, अंतिम होंगे और तब तक निम्नलिखित शर्तों में एक पूरी नहीं हो जाती, पुनर्विलोकन के अधीन नहीं होती, जब मत्तानिदेशक को पुनर्मूल्यांकन के लिए आवेदन किया जाता है, अर्थात् :—

(क) मूल्यांकन से ऐसा प्रभाव हुआ है, जिसकी पूर्वकलना, उस समय नहीं की जा सकती थी जिस समय इसे किया गया था और पश्चात्वर्ती सेवा की प्रवृत्ति और क्वानिटी पर भी विचार करते पर, अनुचित रूप से कठोर है। इन आवधारों पर पुनर्विलोकन के लिए किसी आवेदन को पेशन के सिवाए या सेवोन्मुक्ति पर, परिपूर्वत ही, समय पूरा करने से पूर्व देवल अंतिम वर्ष के भोतर प्रयोगित किया जा सकेगा। किसी भी आवेदन पर विचार नहीं किया जाएगा जब पेशन योग्य सेवा के दोहान चरित्र अभिलेख में ऐसा मूल्यांकन, "अच्छा" से निचला या एक मूल्यांकन से अधिक "बहुत अच्छा" उदाहरणार्थ एक "बहुत अच्छा" (तारा) और "अच्छा" को छोड़कर केवल बहुत आपवादिक परिस्थितियों के लिए जाएगा (उदाहरणार्थ व्यक्तिगत अहानुरोद्धरण के कार्य को मान्यता देने के कारण) सम्मिलित है।

(ख) यह विचारास करते का अच्छा कारण है कि ऐसा चरित्र मूल्यांकन जो ऐसे उपर्युक्त मूल्यांकन से निम्नतर है, जो नियम 20 से 25 के अधीन किया जा सकता था; जानबूझकर नहीं किया गया था। इन आवधारों पर पुनर्विलोकन के लिए कोई आवेदन मूल्यांकन को संमोचित कर दिए जाने के पश्चात यथानुभव शीघ्र किया जाएगा। यदि आवेदन, युक्तिगृहन प्रवृत्ति के भोतर नहीं किया जाता है, तो उसमें विश्व के कारण भी सम्मिलित होते हैं।

(ग) मूल्यांकन अनुचित या या यह वह जिससे जूल्यांकन प्रभावित है, अन्यान्यरूप है या स्वयं में अनुचित रूप से कठोर है या यह दुरल्ल प्रभावित करता है। इन आवधारों पर पुनर्विलोकन के प्रावेदन में शिकायत करने के लिए विहित प्रक्रिया का पालन किया जाएगा। कोई ऐसी शिकायत, यथानुभव शीघ्र जब तब्दी भी सुनिश्चित किए जाने हैं, किए जाएंगे।

(2) केवल, चरित्र मूल्यांकन के पुनर्विलोकन के लिए प्रावेदन, जिस पर, किसी नामांकित व्यक्ति के निर्मुक्त होने के पश्चात, वे जो सेवोन्मुक्ति पर अंतिम मूल्यांकन से संबंधित है, विचार किया जा सकेगा, और ऐसे प्रावेदनों पर केवल, यदि अंगील सेवोन्मुक्ति पर, या सेवोन्मुक्ति को तारीख के पश्चात 3 मास के भोतर की जाती है, विचार किया जाएगा ऐसा कोई नामांकित व्यक्ति जो अपनी सेवोन्मुक्ति पर मूल्यांकन से असामुचित प्रभिअवृत्त करता है, तो यह बेतावनी दी जाएगी, कि कोई भी अंगील, तीन मास की प्रवृत्ति के भोतर, महानिदेशक को जी जानी चाहिए।

28. आवधारण का मूल्यांकन—(1) यदि किसी नामांकित व्यक्ति का आवधारण, यदि उसके सेवा में सम्मिलित होने की जारीख से बहुत अच्छा मूल्यांकित किया जाता है, तो, इस आवधारण को प्रविष्टि, सेवा पुस्तिका के पृष्ठ 27/28 पर को जारीगी। बहुत अच्छे आवधारण को बनाए रखने के लिए अप्रेतिष्ठित मानव ईसा नहीं है जैसा कि बहुत अच्छे चरित्र के अधिनियम्य के लिए है किन्तु उससे उच्चतर और अधिक कठोर है। मानक को बनाए रखने के लिए, किसी व्यक्ति की स्वयं प्रियावर्ति करने के लिए और आवधारण से आवधारण करना चाहिए।

(2) किसी व्यक्ति को उसकी सेवा पुस्तिका के पृष्ठ 23/24 पर यथा मूल्यांकित किसी व्यक्ति के चरित्र द्वारा बहुत अच्छा आवधारण नहीं दिया जाता। केवल नियम 29 के उपनियम (1) के खंड (ग) में यथा उपर्युक्त के सिवाए, और इन नियमों के उपर्युक्त रहने सुन, उस वर्ष के पश्चात्वर्ती भाग को जिसके लिए बहुत अच्छा से निम्नतर चरित्र का अधिनियम्य किया गया है, कमान आकिसर द्वारा, बहुत अच्छा आवधारण की प्रवृत्ति के रूप में संबोधा जाएगा।

29. बहुत अच्छे आवधारण को निरन्तरता में अवधारण (1) बहुत अच्छे आवधारण की निरन्तरता में अवधारण, निम्नलिखित परिस्थितियों के अधीन आवधारण है,

(क) जब किसी व्यक्ति को वज्रांति, जारबास, निरोध, रैक में कमी या अच्छे आवधारण के बैंज से विचित रहने का वंड दिया जाता है। केवल दोपसिद्धि के तथ्य से, इस तथ्य पर ध्यान दिए जिसके सुधूर से पूर्व दंड निर्मित कर दिया गया है, और उसके पश्चात भागत: या पूर्णतः भाग कर दिया गया है, अच्छे आवधारण की निरन्तरता में व्यवधान होता है, यदि, तथापि दंड पूर्णतः अस्थाय पूर्ण साक्षित हो जाता है, और विन्दुकित कर दिया जाता है, तो 'बहुत अच्छे आवधारण की निरन्तरता में व्यवधान आवधारण नहीं होता है।

(ख) जब ऐसे कई लंबे आवधारणों के परिणामस्वरूप जिनमें से किसी के द्वारा भी, बहुत अच्छे आवधारण की निरन्तरता में व्यवधान अनिवार्य नहीं होता है, जब अच्छे आवधारण से निम्नतर बैंकिक चरित्र का अधिनियम्य दिया जाता है।

(ग) जब देव होने पर या आस्थान को प्रवृत्ति के पश्चात अच्छे आवधारण का बैंज जानबूझकर नहीं दिया जाता है।

(घ) जब अच्छे आवधारण का बैंज वापस देने में जानबूझकर विनेंद्र किया जाता है।

(ङ) जब दोपसिद्धि पर, सिविल आधिकारी द्वारा, नियम 18 में उल्लिखित शास्त्रियों में से किसी का अधिनियम्य दिया जाता है।

(2) भ्रष्टे भावरण के बैंब ली निरंतरता में प्रारंभ और भवधान सेवा पुस्तिका के पृष्ठ 27/28 पर विनिरिट रूप से सेवावद किया जाएगा।

(3) वह सारी वित्ती बहुत भ्रष्टा भावरण से व्यवधान भ्राता है, तो उसके कारणों को, उसके होने के तुरन्त पर्याप्त, भारतीय नाविक भ्रष्टों को संबोधित कर दिया जाएगा।

(4) बहुत भ्रष्टा भावरण के पुनः प्रारंभ की तारीख को, इसकी निरंतरता में व्यवधान के पश्चात, संबन्ध भारती के अनुसार सेवा पुस्तिका के पृष्ठ 27/28 के समुचित स्तर में सेवावद किया जाएगा।

सारणी

आवरण के व्यवधान का कारण

पुनः प्रारंभ की तारीख

(क) कारबास/निरोध

दोस्री जेल/निरोध स्थाईदंतों से नियुक्ति के पश्चात अपने दिन से

(ख) जब कारबास/निरोध एवं दोस्री नियुक्ति किया जाता है।

(ग) इनमें कोई और भ्रष्टे एवं दोस्री को तारीख के पश्चात अपना भावरण के बैंब से बंधित करना

(घ) जब वैधेकिक अविधि बहुतायक किया जाता है।

(ङ) जब देप हो, भ्रष्टे भावरण का बैंब त दिया गया अवधान सहित, पुरस्कार के या अवधि स्थान में बैंब के लिए विचार किए जाने के लिए भ्रष्टक होने के लिए व्यावधक सेवा की व्यवधि पूरी करने के पश्चात की तारीख से

(च) जब प्रत्यावर्तन में जामबूझकर विलंब किया जाता है।

(छ) सिविल प्राविकारी द्वारा दोषस्तिधि

अध्याप 4

सदाबहरण वित्ती

30. सदाबहरण वित्ती का पुरस्कार इन नियमों के अनुसार सभी अध्यावेशित व्यक्ति सदाबहरण वित्ती के पुरस्कार के लिए पात्र होते हैं। सदाबहरण वित्ती द्वारा बात के रूप में नहीं दिया गया प्रत्यक्षित किया जाएगा कि कोई व्यक्ति गोपीर वंडों से बच गया है। परिक मान आकिसर का मह समाधान हो जाता है कि अध्यावेशित व्यक्ति इन नियमों के अनुसार पुरस्कार के लिए पूर्ण रूप से अद्वितीय ही और पात्र है, तो उसे एक वित्ती उत्तम अवधि दिया जाएगा जब देप हो। वित्ती की अधिकतम संख्या, जो कोई अध्यावेशित व्यक्ति अपनी सेवा के दौरान प्राप्त कर सकेगा, तीन होती।

31. सेवा भ्रष्टता—(1) इसमें पहले कि किसी व्यक्ति पर सदाबहरण वित्ती पुरस्कार के लिए विचार किया जाए, वह नियमित भ्रष्टक सेवा अवधि पूरी कर ली हो।

(क) प्रथम सदाबहरण वित्ती के लिए

(ख) द्वितीय सदाबहरण वित्ती के लिए

8 वर्ष

(ग) तृतीय सदाबहरण वित्ती के लिए

12 वर्ष

(2) सदाबहरण की भ्रष्टी सेवा को, केवल उस समय की, जिसके लिए वेतन अनुसार नहीं है, उदाहरणार्थे, कारबास, निरोध, अविधि, अविधि संबंधी विचारण की प्रतीक्षा करते, भ्राताधारण भ्रष्टी के द्वारा या उस व्यवधि की, वित्ती दोस्रा कोई व्यक्ति किसी कारबास से सेवा के बाहर रहा है, उसकर, मर्हक सेवा के रूप में समर्पित किया जाएगा।

टिप्पणी: विकिसीय प्रवाणपत्र पर या व्याप्ति की विविध प्रश्नावित की वजह से भावधारण प्रहृष्ट करने में असमर्पता के कारण मंजूर की गई भ्राताधारण छूटों को अर्द्धक सेवा के रूप में समर्पित किया जाएगा।

32. भावरण भ्रष्टता—भ्रष्टक सेवा के व्यतिरिक्त कोई वित्ती पुरस्कार के लिए विचार किए जाने से पहले कोई व्यक्ति भावरण द्वारा भी अवधि अहित नहीं रखा जाता है। प्रत्येक वित्ती पुरस्कार के लिए न्यूमतम भ्रेक्षा, वित्ती दिवं जाने के ठीक पूर्ववर्ती संगणनापूर्वक सेवा के दो वर्ष के दौरान निरंतर बहुत भ्रष्टा भावरण है।

33. अतिरिक्त भ्रष्टताएँ—नियम 31 और नियम 32 में विविधिपूर्वक विनिरिट नियमों के अतिरिक्त, किसी व्यक्ति के पास पूर्ववर्ती, वित्ती/वित्ती यथास्थिति, विरीय या तृतीय वित्ती दिवं जाने से ठीक पहले वास्तविक सेवा के 12 मास तक समुचित रूप से निरन्तर रहा है/रहे हैं।

34. पुरस्कार या आवधान के संबंध में कमान आकिसर का विविधतम्
(1) जब कोई व्यक्ति हम नियमों के अनुसार विचार किए जाने के लिए विविध अहित हो जाता है तब कमान आकिसर वित्ती दिवं जाने के लिए विचार करेगा। वहाँ वह व्यक्ति इस के लिए व्यक्ति ने भावरण को अवधित मान बनाए रखा है और वह तब भावधि वित्ती के द्वारा विचारण करेगा और अन्त विविधत को सेवा पुस्तिका के पृष्ठ 4 पर और उपर्याख में यथावधित सदाबहरण वित्ती विवरणी में दर्शित से अधिकारित करेगा। नाविक अपर्याप्ती के भारताधिक आकिसर द्वारा उत्तम रूप से समर्पित व्यवधान वित्ती विवरणी के प्राप्त होने पर, विवरणी में की गई पुष्टि के अनुसार पुरस्कार की तारीख की सेवा पुस्तिका के पृष्ठ 27/28 पर प्रधिलिपित किया जाएगा। बहुत भ्रष्टा भावरण में भंग और बहुत भ्रष्टा भावरण के पुनः प्रारंभ होने की तारीख की सेवा पुस्तिका के पृष्ठ 27/28 पर प्रधिलिपित किया जाएगा।

(2) यदि किसी वित्ती पुरस्कार के संबंध में विचार करने के पश्चात कमान आकिसर यह विविधत करता है कि व्यक्ति आवधान रत्नरामान तक पूर्वजने में स्पष्ट रूप से असमझ हो गया है (उसका विविधत बहुत भ्रष्टा भावरण की अनुसारता में भंग के रूप में प्रभावी होता), तो कमान आकिसर का वित्ती न दिया जाना वाला विविधत उस व्यक्ति की सेवा पुस्तिका के पृष्ठ 4 पर वैरा 15 के साथ अधिलिपित किया जाएगा। बहुत भ्रष्टा भावरण में भंग और बहुत भ्रष्टा भावरण के पुनः प्रारंभ होने की तारीख की सेवा पुस्तिका के पृष्ठ 27/28 पर प्रधिलिपित किया जाएगा। यह प्रधिलिपि भास खाती से की जाएगी और उस पर कमान आकिसर तृतीयांकर करेगा।

(3) किसी भ्रष्टता नियमों में, वित्ती का दिए जाने का विविधत करने के बजाय कमान आकिसर यस व्यक्ति को कह से कम 3 माह या अधिक से अधिक 6 मास की अवधि के पश्चात जाने समझ पुनः उत्पन्न होने का आदेश दे सकेगा। विविधत की सेवा पुस्तिका के पृष्ठ 4 पर वैरा 15 के साथ वित्ती जाना भावित और इस अवधि के दौरान उत्तम

(4) यदि कमान आकिसर आवधान अधिक अवधि के अंत में यह विविधत करता है कि यह यह भासा जा सकता है कि उस तारीख के पृष्ठ 4 की वर्ष के दौरान अवधि का भावरण भ्रष्टक स्तरराम तक पहुंच गया।

है तो विस्ता ऐसे अधिकार विविहार की तारीख से विद्या जाएगा और तेवा पुस्तिका के पृष्ठ 4 पर को गई अधिकार की यह उपराजित करने के लिए रेखांकित किया जाएगा कि आस्थान सारांश था।

(5) मरि आस्थान अधिकार के अंत में कमान आकिसर मह विविहार करता है कि अधिकार का आवारण अभी भी अधिकार स्तरमान के भीतर है, तो उसके बहुत अच्छा आवारण की नियतरता को उस विद्या भंग के रूप में माना जाएगा जिसकी बहुत प्रयत्नम् पुरस्कार के विचारार्थ अद्वित है। बहुत अच्छा आवारण के विचारार्थ को गई हारीख को, अर्थात् उस विद्या को, जिसके पश्चात् वह अधिकार प्रबन्धन, विचारार्थ अद्वित हुआ, तेवा-पुस्तिका के पृष्ठ 27/28 पर जाल स्थानी से प्रविष्ट किया जाएगा और उह पर कमान आकिसर अनुसार करेगा।

(6) किसी ऐसे अधिकार की जिसे एक या अधिक ऐसे छोटे देव विद्ये हैं विद्यमें पुरस्कार के ठीक पूर्ववर्ती ही कर्त के दौरान बहुत अच्छा आवारण की नियतरता में भंग अन्तर्भित नहीं है, ऐसे हीने पर भी विस्ता के मोय सक्षम जाएगा, यदि उसका सावारण आवारण और अवस्थार अधिकार स्तरमान का हो। इसके विचारार्थ, अधिकार किसी अद्वित को गोई देव त मिला हो, फिर भी कमान आकिसर, उसे कुछ परिवर्तितियों में अधिकार स्तरमान के भीतर मान सकता है।

(7) किसी अधिकार की सावारण विस्ता से अधिकत लिए जाने से पहले कमान आकिसर को सौंप यह अधिनियमित करना चाहिए कि यह उसे कोई विस्ता पुरस्कार के देव है, और यदि उसे देव है तो कमान आकिसर को उस प्रवाराप के, जो उस अधिकार पर आरोपित है, किए जाने से पहले, उसके आवारण के प्रतिनियों से विस्ता पुरस्कार के लिए विचार करना चाहिए। मरि अधिकार का आवारण ऐसे पुरस्कार के भीय है, तो कमान आकिसर को देव सावारण विस्ता देना चाहिए। उसके पश्चात् आवारण के पृष्ठान्त के आवारण के आवारण पर किसी विस्ता या विस्तों से बोक्षत किए जाने के अवन पर विचार किया जाएगा।

35. सावारण विस्ता विषयी—(1) कमान आकिसर उस में लिए गए फार्मेट के अनुसार जोत की पुस्तिकों में जो हुए कार्यक जो इस गए सावारण विस्तों को उपराजित करते हुए एक विषयी यो प्रतियों में नाविक घूरों के आवारण आकिसर को प्रत्येक मात्र की पहसुकी तारीख को देंगा।

(2) नाविक घूरों के आवारणक आकिसर सारांशित करने के पश्चात् विषयी की दूल प्रति की कमान आकिसर को दीदा देना।

36. कमान आकिसर द्वारा पुरस्कार अंतिम माना जाएगा—

इन नियमों के अनुसार कमान आकिसर द्वारा प्राविहृत विस्ता पुरस्कार या उसके प्रत्यर्पण को (जो नाविक घूरों के आवारणक आकिसर द्वारा कुम्भक जन से प्राप्तियां हो) अंतिम माना जाएगा और वहांनियेक के पूर्व प्राप्त घोषन के विद्या उसमें गोई परिवर्तन नहीं किया जाएगा।

37. सावारण विषयी—इन नियमों के उपराजित के अनुसार सावारण विस्ता ये विषयी अधिक पुरस्कार/पुरस्कारों से सक्षम सावारण वेतन का हक्कार होता।

38. विस्तों के पुरस्कार में गलतियां—यदि कोई विस्ता गलत तारीख से दिया गया है या उसका प्रत्यर्पण किया गया है तो वह अर्थक अवधि विद्यके दौरान वह विस्ता कोई और विस्ता दिए जाने या प्रत्यर्पण किए जाने से पहले विचारित किया गया है, उस ठीक तारीख से प्रारम्भ होनी विद्यसे उसके पूर्ववर्ती विस्ता विद्या जाना या प्रत्यर्पण किया जाना चाहिए। यदि गलत पुरस्कार दिए जाने के परिणामस्वरूप कोई अति संशय किए गए तो उसकी वहसुकी भूली की जाएगी।

39. पहसुक की गई विस्ता की संगणना—(1) ऐसे बहुत सौन्दर्य कार्यिक को, जिसमें इकायी कम से तटराजक मैं प्राप्तियां कर लिया गया है। नीतेना में उनके द्वारा उपायित सदाचारण विस्ते सामाने की अनुज्ञा दी जाएगी। उसमें तटराजक मैं अधिकतम् 3 सदाचारण विस्तों के समीत एवं हुए उत्तराचारण विस्ता पुरस्कार के लिए पहसुक की गई उनकी विस्ता की संगणना करने की भी अनुज्ञा दी जाएगी।

किसी बहुत सूखे नीतेना कार्यिक से भिन्न बहुत सूखे कार्यिक इन विस्तों के पुरस्कार के लिए नीतेनी अधिकार की संगणना तटराजक सेवा में अवैध का तारीख से करेंगे।

(2) तुन: नियोजित नीतेना कार्यिक को, सदाचारण विस्तों के पुरस्कार के लिए पहसुक की गई सेवा का कोई कायदा नहीं मिलेगा। वे इन विस्तों के पुरस्कार के लिए अपनी अधिकार की संगणना तटराजक मैं प्रयोग की तारीख से करेंगे। किसी उसमें नीतेना में उपायित सावारण विस्ता (विस्ते) सामाने की अनुज्ञा किसी कार्यिक कामये के विना दी जाएगी। ऐसे अधिकत द्वारा ये विस्ते महीं समाए जाएंगे विद्युत नियोग या रेंक में अद्वित या किसी नियमित रेंक में जाने का देव दिया गया है। नियम 40 के उपनियम (2) के अनुसार इन विस्तों को पुनः समाया जा सकेगा।

40. सावारण विस्ते, ज्ञा प्रत्यर्पण देना—(1) सावारण विस्तों के प्रत्यर्पण वर तब विचार किया जा सकेगा और वह देव हो, जहाँ वह अधिक द्वारा करे या न करे। सावारण विस्ता पुरस्कार के लिए नियम 34 के उपनियम (1) में दी गई प्रक्रिया का अनुपालन किया जाएगा।

(2) छह मास के बहुत अच्छा आवारण से एक विस्ता दुनः आवारण किया जा सकेगा और अतिरिक्त विस्तों के बासने में पूर्ववर्ती प्रत्यर्पण और तारीख से 6 मास की और अधिक संगणित की जाएगी। यदि किसी अधिकार को पहली बार पुरस्कार से अधिकत लिए जाने के पश्चात सेवा के तीव्र वर्ष के भीतर पहली बार अधिकत लिए जाने का दबावदेव दिया गया है तो प्रथम प्रत्यर्पण के लिए प्राप्त होनी 12 मास और प्रथेक पश्चातवर्ती प्रत्यर्पण के लिए छह मास होती।

(3) पुरस्कार के प्रयोजनों के लिए विद्या अधिकार की संगणना नहीं की जाती है उसकी संगणना विस्तों के प्रत्यर्पण के लिए भी नहीं की जाएगी।

(4) यदि कोई अधिकत उन समय तक वह प्रत्यर्पण आवारण्यतया देव हो, अधिकार के अधिकारित स्तरमान तक पहुंचने में असफल हो जाया है तो

मह कमान आकिसर के विवेकाधिकार के द्वीपांतर होता कि वह विस्ता के प्रत्यर्पण मैं विस्तव्य कर दे। जब इस उपनियम के अधीन विस्ता के प्रत्यर्पण में विस्तव्य किया जाता है तब बहुत अच्छा आवारण की नियतरता की, उस अधिकत द्वारा बहुत अच्छा आवारण के प्रत्यर्पण की तारीख की, भंग जाना जाएगा और उसके ग्राने विद्य से अर्हता की नहीं प्रधान प्रारम्भ होती। यह प्रक्रिया की तब तक पुनरावृति की जाएगी। जब तक कि अधिकत आवारण स्तरमान आवारह नहीं कर लिया जाता। इस तर्फ को कि किसी विस्ता के प्रत्यर्पण में विस्तव्य की गई है, अपनि वी विस्ता पुरस्कार के पृष्ठ 4 पर किया जाएगा।

(5) जब सामान्य तारीख के आवारण विस्ते के प्रत्यर्पण किया जाता है, तब वेवा पुस्तिका मैं प्रत्यर्पण के तात्पर्य को यह उपराजित करने के लिए रेखांकित किया जाएगा कि प्रत्यर्पण मैं भी वेवा वर्तमान विस्तव्य किया गया है।

प्रश्नाय 3

दृष्ट न्यायालयों और तट रक्षक न्यायालयों में विधिक राजाह का काउन्सेल की भिन्नता और कानूनिक की प्रतिरक्षा, ऐसे मामले जिनमें तट रक्षक अधिकारीजन में हितवद्ध हैः—

41. ऐसे मामलों में जिनमें तट रक्षक वित्तीय रूप से या अन्यथा किसी दृष्ट न्यायालय में किसी अधिकारी के अधिकारीजन में (जारी तट रक्षक अधिनियम, 1978 के मानीन हो या नहीं) प्रतिरक्षा कर से हितवद्ध है, निम्नलिखित प्रक्रिया का अनुसरण किया जाएगा :—

(क) या तो राज्य सरकार का महाअधिकारी, जहाँ अधिकृत पर अभियोजन है, या जब अभियोजन तट रक्षक मुकाबले से प्रतिश्वेष रूप से निर्भावित है, भारत सरकार का अधिकारी/हाउसेन की प्रतियोगित किया जाना चाहिए जो यदि आवश्यक हो, राज्य के अनुसार जहाँ अभियोजन का संचालन किया जा रहा है महाअधिकारी अधिकारी अधिकारी से भीर सजाह नहीं;

(ख) कोई भी अभियोजन नियन्त्रित में पर्याप्त विधिक सरदार के बिन संस्थित नहीं किया जाएगा और कोई भी अभियोजन, केन्द्रीय सरकार की नियंत्रण किए बिना ऐसी रीति से शो ऐरो विधि सलाह के प्रतिकूल हो, संस्थित नहीं किया जाएगा या आपम नहीं किया जाएगा;

42. अभियोजन अभिकरण—ऐसे मामलों में अभियोजन साधारणतया लोक अभियोजक, पुस्तिक विभाग का अभियोजन स्टाफ सरकारी लौटर या संबंधित राज्य सरकार के अन्य विधि अधिकारी द्वारा संचालित किया जाएगा और उस मामले में अभियोजन का अन्य सामान्य घटनक्रम में सरकार द्वारा किया जाएगा।

43. ऐसे मामले जिनमें सरकारी अधिकारी अभियोजन का नियम नहीं से सकता :—

किन्तु जब सरकारी अधिकारी या संबंधित राज्य सरकार के अन्य विधिक अधिकारी की नियुक्ति के भावले की प्रकृति कारण या किसी अन्य कारण से साध्य नहीं है और सरकारी अधिकारी, जिससे परामर्श किया गया है, यह सलाह देता है कि विवेद काउन्सेल को नियोजित किया जाए, तब संबंधित सरकारी अधिकारी संबंधित की सलाह पर उत्तर काउन्सेल की शक्ति और दैनिक भूमि, महानिवेदक द्वारा, जिसने काउन्सेल की आवश्यक रूप से नियुक्त किया है अंगूर किए जा सकेंगे।

महानिवेदक, महाअधिकारी या केंद्रीय सरकार के अधिकारी द्वारा की जाने वाली अधियोजन पर न्यायालय फौल, आदेशिक फौल और ऐसे ही अन्य से संबंधित अन्य को पूरा करने के लिए भी सकत है।

44. फीस तय करना—अस्तर्वलित कुल लागत के प्रावक्षण के साथ तय पाई गई फीस की रकम के बारे में केंद्रीय सरकार को तुरंत रिपोर्ट दी जाएगी। मामले की सामाजिक पर, परिणाम की ओर अन्य के पूर्व विवरण की एक रिपोर्ट केंद्रीय सरकार को भेजी जाएगी।

45. अम्भावेशित व्यक्तियों की प्रतिरक्षा के लिए प्रक्रिया—दाइक अपराधों से आरोपित अम्भावेशित व्यक्तियों की प्रतिरक्षा और दाइक न्यायालयों में सरकार द्वारा अभियोजन के लिए निम्नलिखित नियम हैः—

(क) जब अम्भावेशित व्यक्तियों का विवारण किन्तु दाइक आरोपी पर्याप्तिकी दाइक न्यायालय द्वारा किया जाना है तब महानिवेदक या दाइक कमांडर मुक्त अनुसार/मुक्त न्यायिक मजिस्ट्रेट से परामर्श करेगा और अधिकारी के बयन और परिव्राजिक के लिए उसके साथ मिलकर व्यवस्था करेगा।

(ख) भिन्न भागों के विभेदीय सरकार हितवद्ध है अधिकारी को भगतान की जाने वाली अधिकारी ये रकम केंद्रीय सरकार द्वारा नियत की गई भरकारी अधिकारी अधिकारी की संदेश रकम से अधिक नहीं होती।

(ग) किसी संदेश विचारण में, जब महानिवेदक या प्रादेशिक कमांडर का समाधान हो जाए कि अभियुक्त की प्रतिरक्षा की भिन्न रीमिंग अधिकारी हैं वह वह रकम प्रतिरक्षा की जाने वाले प्रत्येक अभियुक्त के लिए की रूप का पृथक संदाय प्राप्तिकृत कर सकेगा।

(घ) मध्यस्थिति महानिवेदक या प्रादेशिक कमांडर जेवन उत्तर मामलों में जहाँ वह बालतीय समसे, किसी अधिकारी को नियन्त्रित करेगा। अधिकारी संशय की जाने वाले रकम को, उत्तरोत्तर अधिकारी के मध्ये भूते हुए नियन्त्रित होने वह किसी जाएगा, मदि इन नियमों के अन्तर्मध्ये प्रारंभिक पर उत्तराधिकारी अधिकारी अभियोजन नहीं किया जा सकता है, तो इस भावले की रिपोर्ट केंद्रीय सरकार को इस पर उनके आदेश अभियोजन करने की दृष्टि से की जाएगी।

(इ) ऐसे उच्च न्यायालयों में, जिनमें कि मानिनियर प्रारुदेश एवं सालिविटर नियुक्त रिपोर्ट किया जाए और उनके बायर का विषय जिसके अन्तर्मध्ये उत्तरोत्तर वंड (ख) में अधिकारी प्रतिवर्धनों के अधीन रहते हुए अधिकारी मध्ये की भीत भी है, सरकार के आदेश के लिए प्रस्तुत करने से पूर्व उसे केंद्रीय सरकार के अधिकारी के पास भेजा जाएगा और उसका यह प्रवागात्र अधिकारी किया जाएगा कि विन की रकम उठाई है।

(ख) जब किसी दाइक न्यायालय में प्रथम विवारण पर किसी अम्भावेशित व्यक्ति की ठीक प्रकार से प्रतिरक्षा के लिए अधिकारी का प्रबन्ध किया गया है, तो उत्तरोत्तर वंड (ख) और (य) में अधिकारी प्रतिवर्धन रहते हुए, अपील में भी, जब यह आवश्यक समझा जाए, काउन्सेल का प्रबन्ध किया जा सकता है।

46. अधिकारियों की प्रतिरक्षा के लिए प्रक्रिया—जब किसी अधिकारी का किसी दाइक न्यायालय पर किसी दाइक न्यायालय द्वारा विवारण किया जाना है और अधिकारी की प्रतिरक्षा दाइकीय सरकार गया है तब मामले के बारे में सरकार के आदेश अधिकारी प्रतिवर्धन करने के लिए उसका रिपोर्ट महानिवेदक को की जाएगी।

47. तट रक्षक न्यायालयों में अभियोजन के लिए काउन्सेल की नियुक्ति-दृष्टि महानिवेदक या प्रादेशिक कमांडर और तट रक्षक न्यायालय संघोंशित करता है, किसी अभियुक्त के अभियोजन के लिए किसी काउन्सेल को नियुक्त करना आवश्यक समझता है तो नियम 41 से 46 के अनुसार किसी उपर्युक्त काउन्सेल की जाएगी।

प्रश्नाय 6

सेवा विवेषाधिकार

कुर्की से उन्मुक्ति—

48. तट रक्षक सेवा में के किसी व्यक्ति, जब तक वह अधिनियम के अधीन है, के विवाद प्रवर्तनीय किसी वाये, जिसे या आदेश भी बाबत किसी न्यायालय के प्राविधिकारी, या लोक सेवक, द्वारा जारी की गई किसी आदेशिका या नियोग के प्रवीन उसके आदेश, वक्त, उपर्कर, दायर-सामान या आवश्यक वस्तुओं का अधिग्रहण नहीं किया जाएगा, त ही उस व्यक्ति के बेतन और प्रतीं पा उसके किसी भाग की कुर्की की जाएगी।

49. अरुण के लिए विरप्तिरो में वृत्तिशिवि:—(1) तट रात्रि वेश में
कोई भी व्यक्ति जब तक वह इस भ्रष्टिविरोध के अवैतन हो, हिमी
स्थायानिय के प्राचिनतारी या लौक मंदिर, द्वारा जारी की गई आदेशों या
नियमों के अवार्तन अरुण के द्वितीय विरप्ति रात्रि वेश जारी रहा।

(2) यदि फिरी ऐसे व्यक्ति को उपनियम (1) के उपर्यादों के उल्लंघन में गिरफ्तार किया जाता है तो ऐसा व्यापार या लोक सेवक जिसके द्वारा या जिसके प्रतिनिधि द्वारा ऐसो प्रदर्शित या निशेष जारी किया गया था, गिरफ्तार हिता जाए व्यक्ति द्वारा या उसके वरिष्ठ भ्रष्टाचारियों द्वारा शिकायत करते पर यामन को जांच करते और यदि पहल समाधान हो जाता है कि तियाँ उपनियम (1) के उपर्याद में को पार्ह थीं, तो वह फिर फिर किया गया श्रद्धित फौरन उपोक्तिकृत जाने का आदेश देगा और शिकायतकर्ता को शिकायत करते पर कुछ आवाज विलक्षण करके उसकी जो उसी रीति से बहुलीप होता था मानों ऐसा खर्च ऐसे व्यक्ति जिसकी प्रेरणा पर ऐसो अदरेशित या निशेष जारी हिता गया था, के विरुद्ध किसी ढिक्की द्वारा उसे दिया गया था ।

(3) उपनिषद् (2) के प्रधीन की गई किसी शिकायत पर या उस उपनिषद् के प्रधीन विवरण गए वर्व की व्यूनी के लिए कोई न्यायालय फौस सरेप नहीं होगी।

50. तट रक्क न्यायालय में उत्तमित होने वाले अस्तित्वों की गिरावटार किए जाने से उत्पन्नः—

(1) तट रक्षक न्यायालय का कोई भी प्रीडिक्शन अधिकारी या अन्य सदस्य तट रक्षक न्यायालय के नपत्र किसी राज्यवाही का कोई भी विधि अधिकारी, पश्चात्र या ऐसे पश्चात्र का होई भी अधिवक्ता या अधिकारी, और तट रक्षक न्यायालय में सदन के अनुपालन में हाजिर होने वाला कोई भी साथी, तट रक्षक न्यायालय में जाने, हाजिर होने और वहाँ ने सौंदर्य के दोरान किसी सिविल या राजस्व आदेशिका के प्रतीनि विरामान नहीं किया जाएगा।

(2) यदि कोई ऐता व्यक्ति, किसी ऐसी आदेशिका के अधीन गिरफ्तार किया जाता है, तो पहले तड़ रक्त न्यायालय के आदेश में उम्मोदित किया जा सकता है।

51. तट रक्षक सेवा में के व्यक्तियों से संबंधित मामलों की सुनवाई के लिए पूर्विकर्ता :—(1) तट रक्षक सेवा में के किसी व्यक्ति, जब तक वह अधिनियम के भवीत है, तारा या उपरी ओर से, किसी सिविल या द्वारिष्ठ का राजस्व व्याधानय के समन, ऐसे व्याधान व में हिसे वाद या अन्य कार्यवाही का अभियोजन करने या प्रतिवाद करने के प्रयोगनार्थ उसको समुचित तट रक्षक प्रधिकारी से अनुपस्थित होने की हजारत दिए जाने या इसके लिए उसके द्वारा आवेदन किए जाने या प्रभागपत्र प्रस्तुत किए जाने पर, स्थायानय ऐसे व्यक्ति के आवेदन पर, गवामंभव ऐसे आद या अन्य कार्यवाही की सुनवाई या अन्यतम त्रिपादारे के लिए व्यवस्था मंजूर की गई या आवेदन इतन की वर्तिके भीतर करेगा ।

(2) समुचित तट रक्षक प्राधिकारी से प्रमाणपत्र में मंजूर की गई या आवेदित इजाजत की अवधि के पहले और अंतिम दिन का उल्लेख होगा और उस भागने का वर्णन होगा जिसकी बाबत इजाजत दी गई है या उसके लिए आवेदन किया गया है और वह ऐसे प्राधिकारी द्वारा सम्मत रूप से हस्ताक्षरित तथा प्रत्यक्षान्तित होगा ।

(3) स्थायालय को किसी ऐसे प्रमाणपत्र को प्रस्तुत करने या ऐसे व्यक्ति द्वारा या उसकी ओर से उनके मामले में मुनवाई के लिए पूर्विकता के लिए किसी भावेदन की वादात कोई फॉस मंदिय नहीं होगी और ऐसा प्रत्येक प्रमाणपत्र उसमें की अन्तर्वस्तु को शुद्धता का निष्ठात्मक साक्ष्य होगा।

(४) जहां व्यापारिय यथा पूर्खोंकर मंसूर की गई या आवेदित इनाजन की अवधि के भीतर वाद या अन्य कार्यवाही को मूलवाही और अनिम निपटन के लिए कोई व्यवस्था करते में ग्राम्य हो, तो वह ऐसा न कर सकते के प्रते कारणों को अभिनिवित करेगा और उसी एक प्रति ऐसे व्यवित को उसके द्वारा आवेदन करने पर, ऐसी प्रति के लिए आवेदन या उस प्रति की वादन किसी भी प्रकार के संदाय के बिना विलबाएगा।¹

52. घोषिक व्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय का आदेश की प्रतियां प्रभिन्नप्रत रखने का महानिदेशक या कमान आफिशर का प्रधिकार :—ऐसा व्यायालय, जिसके समझ तट रक्ख लेश में के किसी अविन, जब तक वह प्रभिन्निश्चय के अधीन है, के विरुद्ध कोई कार्यवाही की गई है, व्यक्ति के महानिदेशक या कमान आफिशर द्वारा आवेदन किए जाने पर, मामले के निर्णय और अंतिम प्राप्तिशंका की प्रतियां भविन्नल्प्य और निश्चल देगा।

अध्याय-७

ਬੇਨ ਅਤੇ ਭਲਾਂ ਦੀ ਕਟੌਤੀ

53. वेतन आविष्कार से कटौती तब तक नहीं की जाएगी जब तक प्राधिकृत न किया गया हो—इन नियमों द्वारा प्राधिकृत कटौतियों से मिल्ने कोई भी कटौती तट रक्षक के आफिसरों और अध्यायेशित व्यक्तियों को देव वेतन, पेंशन, उपचान भत्ते और अन्य कार्यादां से नहीं की जाएगी।

54. वेतन और भत्तों से कटौती :—निम्नसिद्धित कटौतिया, अधिसिद्धियम के अधीन किसी व्यक्ति के वेतन और भत्तों से, तट रक्षक स्पायालय या कमान आकिंगर द्वारा विवादित किए जिनमें भी की जा सकेंगी कटौती :—

(1) इजाजत के बिना अनुपस्थिति के प्रत्येक दिन के लिए सभी धैतन और भत्ते, जब तक कि ऐसी अनुपस्थिति के भिन्न कमात आफिस के समाधानप्रब रूप में स्पष्टीकरण न दे दिया गया हो और आफिसर के मामले में महानिवेशक द्वारा और अन्य के मामले में उस उप महानिरीक्षक द्वारा जिसके बधीन वह अध्यावैगिक व्यक्ति सेवा कर रहा है अनुमोदित न कर दिया गया है।

परन्तु उम व्यक्ति के संबंध में तट रक्षक न्यायालय या उम व्यक्ति के कमान आकिसग द्वारा उसकी यन्त्रित्यानि के लिए कार्रवाई न कर गई है।¹

(2) उम प्रत्येक दिन के लिए सभी वेतन और भत्ते, जब तक किसी ऐसे अपराध के आरोप में सिविल, वांडिक या सट रक्षक अभिरक्षा में है जिसके लिए बाब में यह कमान आकिसर या सट रक्षक न्यायालय या वांडिक न्यायालय द्वारा सिद्धांत ढूँढ़ाया गया है और कारबास या निरोध के लिए वंडाइट्स किया गया हो।

(3) उम प्रत्येक वित के लिए सभी वेतन और भत्ते, जब वह ऐसी दीवारी के कारण अस्पताल में हो जो कमात आमिसर या उस अस्पताल के भारसाधक चिकित्सा अधिकारी द्वारा अनुप्रभावित हो जहां व्यक्ति की भर्ती की गई हो और ऐसी दीवारी अविनियम के अधीन दृढ़नीय किसी अपराध को कोटि में आने वाले कार्य से कारित होती हो:

परन्तु ऐसा प्रमाणपत्र, आकिसरों के मामले में महानिवेशक द्वारा और अम्यावेशिन अवक्तियों के मामले में उस महानिवेशक द्वारा स्थीकृत कर दिया जाता है।

(1) अधिनियम के अधीन किसी अक्षित के देतन प्रारंभतां की प्रतिपूर्ति के लिए अपेक्षित ऐसी राशि जिसे उसमें अवधिपूर्ण रूप से प्रतिवार्तित किया है या मांगाय करने में इन्कार कर दिया है।

(5) किसी सरकार संपन्नि या नट रक्षक या रक्षा सेवा, मेम, बैंट या संस्था की संपत्ति की हानि, नुकसान या उसके भट्ट हो जाने की प्रतिवृत्ति के लिए अपेक्षित ऐसी राशि, जो सम्पन्न अव्यवेषण के पश्चात

केन्द्रीय सरकार या महानिवेशक को प्रतीत होता है कि उस व्यक्ति के दोषपूर्ण कार्य या भ्रष्टाके के कारण हुआ है।

(6) वह राशि जो नियम 56 के उपबन्धों के अधीन उसकी पत्ती या अर्मेज आथवा अर्मेज यात्रियों के भरण पोषण के लिए संचय या जाने के लिए भवित है।

(7) कोई ऐसी राशि, जो सम्यक अन्वेषण के पश्चात् महानिवेशक या उस उप महानिवेशक को जिसके अधीन वह व्यक्ति सेवा कर रहा है वह प्रतीत होता है कि तट रक्षक, या रक्षा सेवा में कैटीन या किसी अन्य संस्था को देय है।

55 तट रक्षक न्यायालयों या आन्य प्राधिकारियों द्वारा अधिनियम के कटौतियों—मधिनियम के अधीन किसी व्यक्ति के बेतन और भरने से कटौती किसी रक्षक न्यायालय या कमान आफिसर द्वारा अधिनियम के अनुसरण में अधिनियमित जुमाने के किसी आवेदन बेतन और भरने के समर्पण या दंड की आवत की जा सकेगी।

56. पत्ती और बालकों के भरण पोषण का दायित्वः—(1) अधिनियम के अधीन व्यक्ति अपनी पत्ती और अपने अपेक्षित या अप्रवर्त्त बालकों का भरण पोषण करने के लिए उस विस्तार तक वायिकाधीन होगा। मानों वह इस प्रकार अधीन नहीं हो किन्तु ऐसे व्यक्ति के विश्वास किसी डिक्री या दिए गए भरण पोषण आवेदन का निष्पादन या प्रवर्तन उपके शीर, बेतन, आमुद, गोलाकार उपस्कर, उपकरण या पोशाक के विश्वास नहीं होगा।

(2) उपनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी,—

(क) जहाँ केन्द्रीय सरकार या महानिवेशक को समाधानप्रद रूप से यह प्रतीत होता है कि अधिनियम के अधीन किसी व्यक्ति ने बिना युक्तियुक्त कारण के अपने पत्ती या ऐसे अर्मेज बालकों का, जो स्वयं भरणपोषण करने में असमर्थ हैं, अधित्याग किया है या उन्हें यीन अवस्था में छोड़ दिया है, या वह इसरा बिवाह करने के कारण, अपनी पहली पत्ती के पृष्ठ के भरण पोषण की अवस्था करने के लिए दायी हो गया है,

(ख) जहाँ किसी ऐसे व्यक्ति जो अधिनियम के अधीन है या बाव में हो जाता है के विश्वास किसी पत्ती या अपने अपेक्षित पुत्र या अप्रवर्त्त बालकों के भरण पोषण के लिए किसी विधि के अधीन कोई डिक्री या आदेश पारित किया जाता है और डिक्री या आदेश की एक प्रति केन्द्रीय सरकार या महानिवेशक को भेजी जाती है;

वहाँ केन्द्रीय सरकार या महानिवेशक, ऐसे व्यक्ति जो इस प्रकार अधिनियम के अधीन है, के बेतन के एक भाग की ऐसे बेतन से कटौती करने का और ऐसी रीति से विनियोजित करने का निदेश दे सकेगा जो महानिवेशक पत्ती या बालकों के भरण पोषण के लिए विनियोजित करे, किन्तु कटौती की गई रकम, डिक्री या आदेश यदि कोई ही द्वारा नियत की गई रकम से अधिक नहीं होगी।

परन्तु उपनियम (2) में निर्दिष्ट भरण-पोषण के लिए किसी डिक्री या आदेश के मामले में, बेतन से कटौती का निवेश तब तक नहीं दिया जाएगा जब तक कि केन्द्रीय सरकार या महानिवेशक का यह समाधान नहीं हो जाता है कि ऐसे व्यक्ति को, जिसके विश्वास डिक्री पारित हुई है या ऐसा आदेश किया गया है, उस न्यायालय के समझ जिसमें ऐसी डिक्री पारित की गयी है या ऐसा आदेश किया है, मामले का प्रतिवार करने के लिए उपसंजात होने का युक्तियुक्त भवित्व दिया गया है या वह स्वयं या सम्यक रूप से नियुक्ति किसी विधि व्यवसायी के माध्यम से बस्तुतः हासिर हो चुका है।

(3) जहाँ उपनियम (2) में निर्दिष्ट किसी डिक्री या आदेश के अधीन भरणपोषण के बाबत उस बीराम संचय द्वारा दिया गया है जब ऐसा व्यक्ति,

विसके विश्वास किसी या आवेदन किया गया है, अधिनियम के अधीन है उसकी आवत चाहे इस धारा के अधीन उसके बेतन से कटौती की गई हो या नहीं, इन बाकीयों की वस्तुली के लिए कोई कार्यवाही किसी न्यायालय में ऐसे व्यक्ति के इस प्रकार अधिनियम के अधीन नहीं रह जाने के पश्चात् तब तक नहीं की जाएगी जब तक कि न्यायालय का यह समाधान नहीं हो जाता है कि वह उस दिन से पहले जब से वह अधिनियम के अधीन नहीं रह गया है, बाकीयों या उसके भाग का संदर्भ करने में समर्थ या किन्तु वह ऐसा करने में असकल हो गया है।

(4) किसी अन्य विधि में किसी आवत के होते हुए भी जहाँ किसी ऐसे व्यक्ति, के विश्वास जो अधिनियम के अधीन है, भरणपोषण के लिए कोई कार्यवाही प्रारंभ होती है, वही न्यायालय, उस व्यक्ति पर तामील के लिए आदेशिका को ऐसे व्यक्ति के कमान आफिसर के पास भेज सकेगा, परन्तु ऐसी तामील तब तक कि विधिमाला नहीं होती जब तक कि उतनी शनराशि, जो विहित की जाए आदेशिका के साथ न भेजी गई हो, जिससे कि वह व्यक्ति कार्यवाही की सुनवाई में हासिर होने और उस हासिरी के पश्चात् अपने पोत पर बापस लौटने में समर्थ हो सके।

(5) यदि कार्यवाही में ऐसे व्यक्ति जिस पर आदेशिका की तामील की गई है के विश्वास कोई पारित की जाती है या आवेदन किया जाता है, तो आदेशिका के साथ भेजी गई रकम को उस व्यक्ति के विश्वास कार्यवाही के खर्च के रूप में अधिनियमित किया जाएगा।

(6) इस नियम के अधीन, किसी कार्यवाही में कोई भी आदेशिका किसी ऐसे व्यक्ति, जो अधिनियम के अधीन है, के विश्वास, मान्य नहीं होती, यदि उस पर सब तामील की जाती है जब वह आदेशाधीन किसी विवेशी सैन पर या भारतीय जलसेवी से बाहर सेवा पर है।

(7) आदेशिका की प्राप्ति के प्रमाणपत्र, जो यह पूर्वोक्त ऐसे कमान आफिसर द्वारा हस्ताक्षरित होना तात्पर्य है, का भेज किया जाना, इस धारा का साक्ष दोगोना कि आदेशिका सम्पर्क रूप से तामील हो गई है, जब तक कि इसके प्रतिकूल साक्षि न किया जाए।

8. जहाँ किसी ऐसी डिक्री या आदेश द्वारा, जिसकी एक प्रति उस नियम (2) के अधीन केन्द्रीय सरकार या महानिवेशक को भेजी गई है, ऐसे व्यक्ति को जिसके विश्वास डिक्री पारित की गई है या आदेश किया गया है, आदेशिका के साथ खर्चों के रूप में किसी राशि का संदर्भ करने का निवेश दिया गया है, वहाँ केन्द्रीय सरकार उस रकम के हकदार व्यक्तियों को उस रकम की पूर्ण तुट्ठि में संदर्भ कर सकेगी और केन्द्रीय सरकार द्वारा इस प्रकार संदर्भ रकम उप व्यक्ति से जिसके विश्वास डिक्री पारित की गई है या आदेश किया गया है, वस्तुलीय लोक सांग के रूप में समझी जाएगी, और उसे वस्तुली की नियमी अन्य पद्धति पर प्रतिकूल प्रभाव डाले जिन्होंने उपनियम (2) द्वारा प्राविष्ट कटौतियों के प्रतिरक्षित इसके बेतन से कटौती करके बदल दिया जा सकेगा।

9. जहाँ किसी ऐसे व्यक्ति की अधिनियम के अधीन है अपनी पत्ती के कायदे के लिए अपने बेतन और भरनों के किसी भाग का आवंटन किया जाता है वह आवंटन तब तक बन्द या कम नहीं किया जाएगा जब तक कि केन्द्रीय सरकार या महानिवेशक या कमान आफिसर, का यह समाधान महीने से जाता है कि आवंटन आगे नहीं किया जाना चाहिए या उसे कम कर दिया जाना चाहिए।

10. इस नियम में “बेतन” पद के अन्तर्गत किसी ऐसे व्यक्ति को जो अधिनियम के अधीन है आवास राशन/दसद, पीणाक और यात्रा भरना के बदले में भरनों से भिन्न उसकी सेवा की बाबत संवेद सभी राशियों हैं।

5. करित्वम कटौतियों की सीमा :

ऐसी कटौतियों के सिवाय जब नियम 34 के उपनियम (1), (2) और (4) के अधीन की जाती है किसी आफिसर या अध्यादेशिका व्यक्ति

के बेतन और भर्तों से की जाने वाली कुल कटौतियों किसी एक मास में उस मास के लिए उसके बेतन और भर्तों के आधे से अधिक नहीं होगी।

58. कटौतियों से परिहार—

महानिवेशक इसने विवेकानन्दार इस नियमों द्वारा प्राधिकृत बेतन और भर्तों से की जाने वाली किसी कटौती से परिहार कर सकेगा।

[फा. सं. एस इन्यू/0219]
के, श्रीनिवासन, संयुक्त सचिव

उपांच्छ

सदाचारण विल्लों को, जिन्हे दिया गया, प्रत्यापित किया गया या जिनसे वंचित किया गया, मातिक विवरणी
(कृपया नियम 34 देखें)

संखा के स्वारे	संदाचारण विल्ला का नाम	संदाचारण विल्ला के लिए अनुदान	संदाचारण विल्ला के लिए अनुदान नहीं	पहले दिए गए सदाचारण विल्लों की संख्या	संतुष्टि सदाचारण विल्ला दिए जाने की तारीख	बहुत इच्छा सदाचारण	विल्ला के लिए अनुदान करने की तारीख	संपर्क के लिए अनुदान नहीं	पहले दिए गए सदाचारण विल्लों की संख्या	संतुष्टि सदाचारण विल्ला से वंचित होने की तारीख	दिया गया	प्रत्यापित	दिया गया	पहले दिए गए सदाचारण विल्लों की संख्या	
1. कर्तम्पक संघांक	2. नाम	3. ईक	4. जम्म की संख्या	5. वह गरीब जब प्रथम बार रेक दिया गया	6. विल्ला के अनुप्राप्त करने की तारीख	7. संपर्क के लिए अनुदान	8. संपर्क के लिए अनुदान नहीं	9. "बहुत इच्छा सदाचारण" के प्रारम्भ की तारीख	10. पहले दिए गए सदाचारण विल्लों की संख्या	11. संतुष्टि सदाचारण विल्ला दिए जाने की तारीख	12. संतुष्टि सदाचारण विल्ला से वंचित होने की तारीख	13. दिया गया	14. प्रत्यापित	15. दिया गया	16. दिया गया

MINISTRY OF DEFENCE

New Delhi, the 12th November, 1986

NOTIFICATION

S.R.O. 20(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) and clauses (b) and (c) of sub-section (2) of section 123 of the Coast Guard Act, 1978 (30 of 1978), the Central Government hereby makes the following rules namely:—

PART I

PRELIMINARY

1. Short title and commencement.—(1) These rules may be called the Coast Guard (Conditions of Service) Rules, 1986.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. Definitions.—In these rules, unless the context otherwise requires,—

(a) 'Act' means the Coast Guard Act, 1978 (30 of 1978);

(b) 'BUVIK' means Officer-in-Charge of the Bureau of Navika.

(c) 'Coast Guard Region' means,—

(i) The Coast Guard Region, West, comprising of the coastal areas and the maritime zones of India along the coastal areas of the States of Gujarat, Maharashtra, Karnataka, Kerala and the Union territories of Goa, Daman and Diu and Lakshadweep.

(ii) The Coast Guard Region, East, comprising of the coastal areas and the maritime zones of India along the coastal areas of the States of Andhra Pradesh, Orissa, Tamil Nadu, West Bengal and the union territory of Pondicherry.

(iii) The Coast Guard Region, Andaman and Nicobar Islands, comprising of coastal areas and the maritime zones of India along the coastal areas of the Union territory of Andaman and Nicobar Islands.

PART II

CONDITIONS OF SERVICE

CHAPTER I

OFFICERS

3. Appointment.—(1) The Central Government may appoint such persons as it considers to be suitable as officers in the Coast Guard. Officers shall be recruited in accordance with the recruitment rules for various categories of officers.

(2) Procedure for recruitment shall be as promulgated by the Central Government from time to time.

4. Transfers.—(1) After initial appointment to the Service, officers shall be liable for transfer within the service as decided by the Director-General. Officers shall be appointed by the verbal or written orders of the Director-General.

(2) Officers shall not be permitted to select or decline appointment.

(3) Applications to have an appointment cancelled shall not be made except for urgent reasons, which are to be stated fully in writing. If an officer makes such an application, his commanding officer or superior authority shall state whether or not he recommends that the application shall be granted.

(4) Applications for appointments to a particular ship or establishment shall be considered as objectionable and shall not be forwarded to the Director-General but if two officers desire to exchange their appointments, and provided that adequate reasons are given, an application for exchange may be submitted by the commanding officers of the respective ships stating thereon that they have no objection to the request complied with but if they have objections these shall be specified.

(5) The commanding officer shall bear in mind that no application for the discharge or transfer of an officer from his ship, nor for such lengthened leave of absence as to render his return improbable, will be entertained unless he shall certify on the application that he is satisfied with the conduct of such officer. He shall also certify on every application for discharge or transfer, that the request is not made for the purpose of removing the officer from the ship in consequence of any misconduct.

(6) Though the conduct of an officer may not be such as to warrant disciplinary action by Coast Guard Court, he may be considered unsuitable for the appointment he holds, for example through lack of professional ability, personal qualities or conduct. Where his shortcomings compel his Commanding Officer to apply for his relief, the officer shall be fully informed before the application is forwarded to the Director-General. The application must be accompanied by or comprised in a report upon the officer and those adverse parts of the report of which the officer has been informed shall be underlined in red ink. The adverse remarks shall be shown to the officer in accordance with instructions issued by the Director-General from time to time.

5. Officers to report non-availability.—When an officer is not immediately available for employment from any cause whatever, he shall report the fact, for the information of the Director-General through the usual channels.

6. Liability for services.—(1) All officers are liable for service with any other Armed Force of the Union as may be directed by the Government. In selecting officers for such service, preference may be given to volunteers, but if the requisite number of suitable volunteers, is not forthcoming, officers may be detailed as for any other appointment.

(2) All officers are liable for service in any civil or other appointment whether in India or abroad as may be directed by the Central Government.

7. Removal of Commanding Officer.—(1) An officer in command of a ship to which he has been properly appointed shall not, except as hereinafter provided be removed from his command by any superior officer without the prior approval of the Director-General.

(2) Where the circumstances are such which render the removal of an officer from the command of a ship essentially necessary for the public service and

are so urgent as not to permit to prior reference to the Director-General, the Inspector-General under whom the Commanding Officer is serving may direct the removal of the officer from command, reporting the circumstances immediately to the Director-General.

(3) Where a vacancy arises in command of a ship, the Inspector-General concerned may appoint a suitable officer to the command of such ship, reporting the circumstances to the Director-General.

(4) Any appointment made under sub-rules (2) and (3) shall be provisional until the final directions of the Director-General are obtained.

8. Local appointments and Transfers.—Commanders of Coast Guard Regions may order transfer of officers other than commanding officers within the region in exceptional circumstances. Such transfers shall be reported to the Director-General immediately.

9. Training.—(1) On recruitment to the service, officers shall undergo a course of training promulgated by the Director-General.

(2) Selected officers shall be eligible to undergo specialisation courses prescribed for the service.

10. Promotions.—(1) Promotions to various ranks shall be as prescribed in the recruitment rules for each rank.

(2) Seniority, qualifications, procedure for promotions and constitution of Departmental Promotion Committee shall be as promulgated by the Central Government from time to time.

(3) Officers shall be promoted to the next higher rank on fulfilment of conditions/qualifications as promulgated and subject to availability of vacancies in a particular rank.

CHAPTER II

ENROLLED PERSONS

11. Recruitment.—The Director-General may recruit enrolled persons required for the service as per the recruitment rules prescribed for various categories of persons.

12. Liability for service.—(1) All enrolled persons are liable for service with any other Armed Force of the Union as may be directed by the Director-General. In selecting personnel for such service, preference shall be given to volunteers. If the requisite number of suitable volunteers is not forthcoming, persons may be transferred as considered necessary by the Director-General.

(2) All enrolled persons are liable for service in any civil or other appointment whether in India or abroad as may be directed by the Director-General.

13. Transfer of enrolled persons.—(1) Enrolled persons shall be liable for transfer within the service.

(2) The officer-in-charge Bureau of Naviks shall be responsible for issuing transfer orders of enrolled persons and for keeping complete and up-to-date records of the whereabouts of all enrolled persons.

(3) No enrolled person shall be prejudiced in his rank by being transferred to another ship, should there be no equivalent rank in the ship to which he was transferred. In such cases, the person shall be borne as additional.

14. Discharge from ship's book.—(1) No person is to be discharged from the ship's book without the authority of the Director-General, or the Deputy Inspector-General under whom the person is serving except for any of the reasons mentioned in sub-rule (2).

(2) An enrolled person may be discharged from the ship's book without the authority as mentioned in sub-rule (1) in case of death, desertion, transfer, training, sickness, dismissal or sentence of Coast Guard Court.

(3) Unless orders are received to the contrary, all enrolled persons discharged from the ship's book shall be transferred to the Bureau of Naviks for disposal.

15. Transfer between branches.—(1) Transfer from one branch to other may be allowed only, subject to the approval of the Director-General.

(2) The Director-General shall not consider an application for transfer unless :—

- (a) there are vacancies in the branch to which transfer is desired and the training of applicant for the new branch can be arranged,
- (b) the application is recommended by his Commanding Officer and the applicant possesses the prescribed educational qualifications and medical standard for the new branch,
- (c) the transfer is otherwise in the interest of the service.

(3) Application from enrolled persons for transfer from one branch to other shall be submitted to the Officer-in-Charge Bureau of Naviks for onward transmission to the Director-General.

(4) Transfer shall be to the lowest rank in which persons are normally entered in the new branch but may be relaxed at the discretion of the Director-General.

(5) When the transfer is necessary due to medical reasons, the enrolled persons may normally be transferred subject to the above provisions in the equivalent rank.

16. Training.—Persons recruited to the service shall undergo a course of training prescribed by the Director-General from time to time.

17. Promotion.—(1) Enrolled persons shall be eligible for promotion as per the provisions of recruitment rules for various categories of personnel.

(2) Seniority, qualifications, procedure for promotion, reversion and constitution of Departmental Promotion Committee shall be as promulgated by the Central Government from time to time.

(3) Enrolled persons shall be promoted to the next higher rank on fulfilment of conditions/qualifications,

as promulgated and subject to the availability of vacancies.

18. Effect of conviction by civil authorities.—When an enrolled person is convicted by a civil authority and receives any punishment for an offence which has brought disgrace or discredit on the uniform, the service or the position which the person holds, he may be awarded the following penalties with the prior approval of the Inspector-General in Coast Guard headquarters, namely :—

- (a) Break in continuity of very Good Conduct (The date of break in such cases shall be the date of conviction).
- (b) Award of inferior character on the next occasion of assessment.

CHAPTER III

ASSESSMENT OF CHARACTER AND CONDUCT

19. Assessment of Character.—(1) Enrolled persons shall be assessed for character by the Commanding Officer under one of the following terms on the occasions prescribed in rule 26 :—

Very Good, to be written	V.G.
Very Good (Star) to be written	V.G.*
Good, to be written	Good
Fair, to be written	Fair
Indifferent, to be written	Indifferent
Bad, to be written	Bad

(2) In assessing the character of an enrolled person, the Commanding Officer shall consult the Executive Officer and the Divisional Officer of the enrolled person as well as any other officer who may have special knowledge of the person. He shall fully consider all the entries on page 29 of the service book of the person since the date of the last character assessment and his general character and efficiency.

(3) Where an enrolled person has been transferred from another ship, or has been embarked, immediately preceding the 31st December, the Commanding Officer shall take into consideration the remarks made on his Divisional/Departmental Officers, remarks sheet and assessment of conduct.

(4) Where an enrolled person has been temporarily transferred for any course and is to return to the parent ship, the assessment shall be made by the parent ship.

(5) The actual character assessment to be given to any enrolled person shall be at the discretion of the Commanding Officer, subject to the maximum assessments prescribed in rules 20 to 25 and to any inferior assessment already approved. Any assessment which is below the maximum allowable, for example, "Good" when "Very Good" or "Very Good (Star)", is permissible or "Fair" when "Good" is permissible, shall be underlined by the Commanding Officer in order that there may be no question that the assessment has been made advisedly. When considering such discretionary assessments, the Commanding Officer shall bear in mind that any discretionary assessment involves a break in the continuity of the enrolled per-

son's "Very Good" conduct and therefore has an adverse effect on the award or restoration of badges, and on promotion.

(6) If a sentence be quashed, the sentence originally awarded shall not affect the maximum character assessment for which the enrolled person is otherwise eligible.

(7) If a sentence be reduced, the enrolled person shall be eligible for the maximum character assessment applicable to the reduced sentence.

(8) If a sentence be suspended before a committal order is issued, the effect upon character entailed by the infliction of the suspended sentence shall also be regarded as suspended.

(9) With the exception in Sub-rules (6) to (8) the maximum character assessment shall be governed by the sentence as awarded and shall not be affected by remission earned by the offender or granted by the Government, or by discharge of the offender from prison or detention under section 103 of the Act.

(10) A conviction by the civil authority shall not be taken into consideration in the assessment of character, unless an inferior character was either specially approved or was entailed by any other consequential Coast Guard penalty following conviction by the civil authority as per rule 18.

20. "Very Good".— "Very Good" is the highest character assessment attainable even by the enrolled person whose behaviour has been exemplary throughout the year. It shall not, therefore, be awarded automatically to an enrolled person whose general behaviour has not been satisfactory, merely because he has avoided major punishments.

21. "Very Good (Star*)".—(1) The privilege of a "Very Good (Star*)" character is granted in order that an enrolled person may not, by one slip, forfeit the rewards due to an otherwise unblemished record. The Commanding Officer may assess an enrolled person's character as "Very Good (Star*)" once during his career, notwithstanding that an assessment of "Very Good" has been precluded by deprivation of one Good Conduct Badge.

(2) This privilege shall not be allowed unless the Commanding Officer is entirely satisfied with the behaviour, conduct and work of the enrolled person for the year, apart from the offence which resulted in the punishment mentioned in sub-rule (1).

(3) When an offender's sentence is suspended before committal, he has, having been convicted, made the one slip which the privilege of "Very Good (Star*)" is intended to cover and consequently the character assessment of such an enrolled person for the year in which he has received a suspended sentence shall not be "Very Good".

The assessment may be "Very Good (Star*)" subject to :—

- (a) the provisions regarding effect of suspension of sentences upon consequential penalties;
- (b) the provisions of sub-rule (2) and sub-rule (4);

(c) the effect of any other punishment awarded during the year;

(d) the award of "Very Good (Star*)" not being precluded by a previous award of "Very Good (Star*)".

(e) Enrolled persons who have previously received a character below "Very Good" are not eligible for the concession, nor are enrolled persons who have had an inferior assessment specially altered with the prior approval of the Director-General to "Very Good" unless the alteration followed automatically upon the cancellation of a punishment, and then only with the prior approval of the Director-General.

(f) An enrolled person with previous assessment of "Very Good (Star*)" or below, whose character is being assessed for a year in which he had received a suspended sentence, shall not receive a character higher than "Good".

(g) "Very Good (Star*)" shall be regarded as equivalent to "Very Good" for all purposes which entail consideration of character the asterisk being placed against the award to ensure that no enrolled person received such special consideration more than once during his service.

(h) "Very Good (Star*)" cannot be awarded as discretionary assessment to an enrolled person, whose general behaviour during the year is considered by the Commanding Officer not to warrant an assessment of "Very Good".

22. "Good".—(1) Subject to the provisions of rule 21* for the award of "Very Good", a higher character than "Good" shall not be given to any enrolled person if during the period for which his character is being assessed he has been awarded any of the following punishments, namely :—

- (a) Reduction in rank;
- (b) deprived of one or more Good Conduct Badges;
- (c) sentenced to detention or imprisonment or both less than 30 days.

(2) If an enrolled person has been awarded two or more of the above punishments during the year, it shall be open to the Commanding Officer to award an assessment lower than "Good" if he thinks fit. Such a lower assessment shall be underlined.

(3) A higher character than "Fair" shall not be given to any enrolled person who is discharged from the service as unsuitable.

23. "Fair".—A higher character than "Fair" shall not be given to any enrolled person if during the period for which his character is being assessed has been sentenced to be punished in any of the following ways, namely :—

- (a) Sentenced to detention or imprisonment or both for 31 days or more but less than 60 days;
- (b) dismissed without any additional punishment that could affect his character.

24. "Indifferent".—A higher character than "Indifferent" shall not be given to any enrolled person if during the period for which character is being assessed he has been sentenced to detention or imprisonment or both for 61 days or more.

25. "Bad".—"Bad" character may be given only on discharge from the service to enrolled persons who have been :—

- (a) dismissed or discharged after conviction for particularly vicious offences ;
- (b) dismissed or discharged for misconduct after long records of previous misconduct with several earlier assessments of "Fair" or "Indifferent".

26. Record of character assessment.—(1) The character of every enrolled person borne on the books of a ship shall be recorded on page 23/24 of his service book by the Commanding Officer, who shall insert the entry in his own handwriting and write his signature on the same line as the character awarded, as follows :—

- (a) On the 31st December in each year, except where enrolled persons are awaiting trial for desertion.
- (b) On being marked "RUN", but not to be recorded until final discharge from ship's books unless the enrolled person is in desertion on the 31st December of the year in which he is marked "RUN".
- (c) On discharge from the service, except where an enrolled person sentenced to imprisonment is to be discharged direct from the prison to civil life. In such circumstances, his character shall be assessed on the date he is discharged from ship's book.

(2) If an enrolled person dealt with under clause (b) or clause (c) of sub-rule (1) rejoins the service within the year, the assessed character awarded on the 31st December shall cover the whole year, the intermediate character awarded on desertion or discharge being ruled through. This does not apply to recovered deserters awaiting trial at the end of the year; their character shall not be assessed on the 31st December.

27. Reassessment of character.—(1) Assessments higher than those permitted by rules 20 to 25 shall be corrected, with the approval of the Director-General but those properly made by the Commanding Officer in accordance with sub-rule (5) of rule 19 are final and shall not be subject to review unless one of the following conditions is fulfilled, when application may be made to the Director-General for re-assessment, namely :—

- (a) the assessment has come to have an effect which could not have been foreseen at the time it was awarded and which, taking into consideration also the length and quality of subsequent service, is now unduly severe. An application for review on these grounds may be forwarded only within the last year before completion of time for pension or on discharge if earlier. No appli-

cation shall be entertained when the character record during pensionable services includes an assessment below "Good" or more than one assessment other than "Very Good" (for example one "Very Good (Star)") and "Good" except in very exceptional circumstances (for example because of recognition given for an act of personal gallantry);

- (b) there is good reason to believe that a character assessment which is lower than the highest assessment which could have been given, under rules 20 to 25 was not given advisedly. An application for review on these grounds may be made as soon as possible after the assessment has been communicated. If the application is not made within a reasonable period, it shall include the reasons for the delay ;
- (c) the assessment was unfair or the punishment which affected the assessment was unjust or unduly severe in itself or in its immediate affects. An application for review on these grounds shall follow the procedure prescribed for making complaints. Any such complaints shall be made as soon as possible, while the facts are still ascertainable.

(2) The only applications for the review of character assessment which may be considered after an enrolled person has been released are those relating to the final assessment on discharge and such applications shall be considered only if appeal is made on discharge or within 3 months after the date of discharge. Any enrolled person who expresses dissatisfaction with the assessment given on his discharge shall be warned that any appeal to the Director-General must be made within three months.

28. Assessment of conduct.—(1) An enrolled person's conduct if assessed as Very Good from the date he joins the service an entry to that effect shall be made on page 27/28 of the service book. The standard required for the maintenance of Very Good Conduct is not the same as that for award of Very Good Character, but is a higher and more exacting one. To maintain the standard, a person must have conducted himself with sobriety, diligence and attention

(2) Very Good Conduct is not given by a person's character as assessed on page 23/24 of his service book. Except as provided in clause (c) of sub-rule (1) of rule 29 and subject to the provisions of these rules, the latter part of a year for which character lower than Very Good has been awarded may be regarded by the Commanding Officer as a period of Very Good Conduct.

29. Break in continuity of Very Good Conduct.—(1) A break in continuity of Very Good Conduct is oblique under the following circumstances :—

- (a) When a person is awarded a sentence of dismissal, imprisonment, detention, reduction in ranks or deprivation of Good Conduct Badges. The mere fact of conviction shall constitute a break in the continuity

uity of the Very Good Conduct regardless of the fact that a sentence is suspended before committal and subsequently remitted partially or wholly. If however, the sentence is proved to be wholly unjustified and is quashed, break in the continuity of Very Good Conduct shall not be obligatory.

- (b) When a discretionary character lower than Very Good is awarded as a consequence of a number of minor offences none of which by itself necessitate a break in the continuity of Very Good Conduct.
- (c) When a Good Conduct Badge is intentionally not awarded when due or after the period of deferment.
- (d) When restoration of the Good Conduct Badge has been intentionally delayed.
- (e) When on conviction by the civil authority any of the penalties as mentioned in rule 18 are awarded.

(2) The commencement and a break in the continuity of very good conduct shall be specifically recorded on page 27/28 of the service book.

(3) The date on which Very Good Conduct is broken and the reason thereof shall communicate to the Officer-in-Charge.

Bureau of Naviks by issue of a Genform immediately on occurrence.

(4) The date of re-commencement of Very Good Conduct after a break in its continuity shall be recorded in the appropriate column on page 27/28 of the service book as per table appended.

TABLE

Cause for break in conduct	Date of recommencement
1	2
(a) Imprisonment/Detention	On the day after release from such prison/detention quarters.
(b) When the sentence of imprisonment/detention is suspended.	On the following day of suspension.
(c) Reduction in rank and deprivation of Good Conduct Badge	On the day after the date of sentence.
(d) When discretionary character assessment awarded.	The date following the date of award of discretionary character assessment.
(d) Good Conduct Badge not awarded when due or after period of deferment	The day after the person completed the necessary period of service with Very Good Conduct to qualify for consideration for award of the badge in the first place.

1	2
(f) When restoration is intentionally delayed	The day after a person completed the necessary period of service with Very Good Conduct to qualify for consideration in for the restoration of badge in the first place.
(g) Conviction by civil authority	On the day after the date of conviction.

CHAPTER IV GOOD CONDUCT BADGES

30. Award of good conduct badges.—All enrolled persons shall be eligible for the award of Good Conduct Badges in accordance with these rules. Good Conduct Badge shall not be awarded or restored as a matter of course merely because a person has avoided serious punishments. If the Commanding Officer is satisfied that an enrolled person is fully qualified in accordance with these rules and is deserving of the award, a badge shall be conferred, when due. The maximum number of badges that an enrolled person may earn during his service shall be three.

31. Service qualification.—(1) Before a person can be considered for the award of Good Conduct Badge, he must have completed the following periods of qualifying service :—

- (a) For first Good Conduct Badge—4 years
- (b) For second Good Conduct Badge—8 years
- (c) For third Good Conduct Badge—12 years

(2) The entire service in the Coast Guard shall be reckoned as qualifying service with the exception of time for which pay is not allowed, for example, time lost during which a person has been out of service waiting trial for desertion, extraordinary leave or time during which a person has been out of service for any cause.

NOTE.—Extra-ordinary leave granted on medical certificate or due to inability of the individual to join duty on account of civil commotion will be reckoned as qualifying service.

32. Conduct qualification.—In addition to the qualifying service, a person must have qualified by conduct before being considered for the award of badge. The minimum requirement for the award of each badge is continuous very good conduct during the two years of reckonable service immediately preceding the award of the badge.

33. Additional qualifications.—In addition to the specific conditions laid down in rules 31 and 32, a person must have been properly in continuous possession of the preceding badge/badges for the 12 months of actual service immediately prior to the award of the second or third badge, as the case may be.

34. Commanding Officer's decision regarding award of the second or third badge, as the case may be, for consideration in accordance with these rules,

the Commanding Officer shall consider the award of badge whether the person applies for the same or not. If the Commanding Officer decides that the person has maintained the requisite standard of conduct and is in all respects deserving badge, he shall award the badge with effect from the due date and record his decision in pencil on page 4 of the service book and on the Good Conduct Badges return as shown in Annexure. On receipt of Good Conduct Badge Return duly verified by the officer in charge Bureau of Naviks, the date of award as confirmed on the return shall be recorded on page 4 of the service book in ink.

(2) If after considering the award of a badge, the Commanding Officer decides that the person has clearly failed to reach the necessary standard (his decision shall operate as a break in the continuity of Very Good Conduct), the Commanding Officer's decision not to award the badge shall be recorded on page 4 of the person's service book alongside para 15. The break in very Good Conduct as well as the date of recommencement of very good conduct shall be recorded on page 27/28 of the service book. This entry shall be made in red ink and signed by the Commanding Officer.

(3) In appropriate cases, however, instead of deciding not to award the badge, the commanding officer may direct the person to appear before him again after a period not less than 3 or more than 6 months. This decision should be noted on page 4 alongside para 15 of the service book and during this period, the person shall not be promoted in rank.

(4) Should the Commanding Officer decide at the end of the period of deferment that the person's conduct during the two years preceding that date may now be considered to have reached the qualifying standard, the badge shall be awarded from the date of such final decision and the entry on page 4 of the service book will be underlined to indicate that the deferment was intentional.

(5) If, however, at the end of the period of deferment, the commanding officer decides that the person's conduct is still below the requisite standard, the continuity of his Very Good Conduct shall be regarded as broken on the day he qualified for consideration of the award in the first instance. The fresh date of recommencement of very Good Conduct, that is to say, the day after the person qualified for consideration in the first instance, shall be entered in red ink on page 27/28 of the service book and signed by the commanding officer.

(6) A person who has received one or more minor punishments not involving a break in the continuity of Very Good Conduct during the two years immediately preceding the award may nevertheless be deemed worthy of badge, if his general conduct and bearing are of the requisite standard. Conversely, although a person may not have been punished, the commanding officer might, in certain circumstances, consider him below the requisite standard.

(7) Before a person is deprived of a Good Conduct Badge, the commanding officer must invariably ascertain whether he is due for the award of any

badges, and if he is due, then the commanding officer should consider the award of the badges with reference to the person's conduct prior to the commission of the offence with which he has been charged. If the conduct of the person so merits, the commanding officer should award the Good Conduct Badge due. The question of deprivation of a badge or badges shall then be considered on the merits of the case.

35. Good Conduct Badge return.—A return in duplicate as per format at Annexure shall be rendered by the commanding officer on first of every month to the officer-in-charge, Bureau of Naviks indicating Good Conduct Badges awarded to the personnel borne on the books of the ship.

(2) The officer-in-Charge, Bureau of Naviks, after verification shall return the original copy of the Return to the commanding officer.

36. Finality of awards by the Commanding Officer.—An award or restoration of a badge authorised by the Commanding Officer in accordance with these rules (duly verified by the Officer-in-Charge, Bureau of Naviks) shall be regarded as final and shall not be altered without prior approval of the Director-General.

37. Good Conduct Pay.—The possession of Good Conduct Badge in accordance with the provisions of these rules shall entitle a person to the Good Conduct Pay attached to the award/awards.

38. Errors in the award of badges.—If a badge has been awarded or restored from an incorrect date, the qualifying period during which that badge must have been held before a further badge can be awarded or restored shall commence from the correct date from which the said preceding badge ought to have been awarded or restored. Over payments, if any, made consequent on erroneous award shall not be recovered.

39. Counting of former service.—(1) Ex-Naval personnel who have been absorbed permanently in the Coast Guard will be allowed to wear Good Conduct Badges earned by them in the Navy. They will also be allowed to count their former service for the award of Good Conduct badge in the Coast Guard subject to a maximum of 3 Good Conduct Badges. Ex-service personnel other than ex-naval personnel, will however, count their time for award of these badges from the date of entry into the Coast Guard service.

(2) Re-employed naval personnel will not enjoy any benefits of former service for the award of Good Conduct badges. They will count their time for the award of these badges from the date of entry into the Coast Guard. However, they will be permitted to wear the Good Conduct Badge(s) earned by them in the Navy without any monetary benefits. These badges will not be worn by persons who have been awarded punishment of detention or reduction to the rank or to a lower rank. The badges may be re-worn in accordance with sub-rule (2) of rule 40.

40. Restoration of Good Conduct Badges.—(1) Restoration of Good Conduct Badge may be consi-

dered when it becomes due whether the person prefers his claim or not. The procedure in sub-rule (1) of rule 34 for the award of a Good Conduct Badge shall be observed.

(2) One badge may be regained by 6 months Very Good Conduct and additional badges by further period of 6 months reckoned in case from the date of preceding restoration. If a person has been sentenced to deprivation a second time within three years of service after the first deprivation, the qualification shall be 12 months for the first restoration and six months for each subsequent restoration.

(3) Time which does not count for purposes of award shall not be reckoned towards restoration of badges.

(4) It shall be within the discretion of the Commanding Officer to delay the restoration of a badge if at the time restoration would normally be due, a person has failed to reach the required standard of conduct. When restoration of badge is delayed under this sub-rule, the continuity of "Very Good" Conduct shall be regarded as broken on the date on which the person completed six months or twelve months "Very Good" Conduct and a fresh period of qualification commences the following day. This procedure may be repeated until the required standard of conduct is attained. The fact that the restoration of a badge has been delayed shall be noted on page 4 of the person's service book.

(5) When a badge is restored after the normal date, the notation of restoration in the service book shall be underlined to indicate that the restoration has been advisedly delayed.

CHAPTER V

LEGAL ADVICE, ENGAGEMENT OF COUNSEL AND DEFENCE OF PERSONNEL IN CRIMINAL COURTS AND COAST GUARD COURTS

41. Cases in which Coast Guard interested in prosecution.—In cases in which the Coast Guard is directly interested financially or otherwise in the prosecution of an offender in a Criminal Court (whether subject to the Coast Guard Act, 1978 or not), the following procedure shall be followed :—

(a) either the Advocate General of the State Government where the accused in prosecuted or, when the prosecution is directly controlled from the Coast Guard Headquarters, the Advocate-Counsel to the Government of India should be employed, who will if necessary, take further advice from the Advocate General, or the Government Advocate, according to the State in which the prosecution is being conducted;

(b) no prosecution shall be instituted without adequate legal advice being taken in writing, and that no prosecution shall be instituted or withdrawn in any manner contrary to such legal advice without reference to the Central Government.

42. Prosecuting agency.—In such cases the prosecution will ordinarily be conducted by the Public Prosecutor, the prosecution staff of the Police Department the Government pleader or other Law Officer of the State Government concerned. In which case the expenses of the prosecution will be defrayed by the Government in the ordinary course.

43. Cases where government advocate cannot undertake the prosecution.—When, however, the employment of a Government Advocate or other Law Officer of the State Government concerned is not feasible owing to the nature of the case or for any other reason and the Government Advocate, who is consulted, advises the employment of special counsel, the fees, travelling and daily allowances of the latter may, on the advice of the Government Advocate concerned, be sanctioned by the Director-General who formally engages counsel. The Director-General is also empowered to meet expenditure on court fees, process fees, and the like, on a requisition to be made by the Advocate General or Central Government Advocate etc.

44. Settlement of fees.—The amount of fees agreed upon shall immediately be reported to the Central Government together with an estimate of the total cost involved. On conclusion of the case, a report of the result and a complete statement of costs shall be forwarded to the Central Government.

45. Procedure for defence of enrolled persons.—The following are the rules for the defence of enrolled persons charged with criminal offences, and prosecuted by Government in criminal courts :—

(a) When enrolled persons are to be tried by a criminal court upon any criminal charges, the Director-General or the Regional Commander shall consult the Chief Metropolitan Chief Judicial Magistrate and arrange with him for the selection and remuneration of advocate.

(b) Except in cases in which the Central Government are interested, the maximum amount that may be paid to the advocate shall not exceed the amount payable to the Government advocate fixed by the Central Government.

(c) In a joint trial when the Director-General or the Regional Commander is satisfied that the accused require different lines of defence, he may authorise separate payment of fees for each accused so defended.

(d) The Director-General or the Regional Commander as the case may be, shall appoint an advocate only in cases where he thinks desirable. The amount to be paid to advocate shall definitely be settled before hand, subject to the above maximum. If suitable advocate cannot be obtained for the remuneration admissible under these rules the case shall be reported to the Central Government with a view to their orders being obtained thereon.

(e) In High Courts in which advocate may not plead unless instructed by a solicitor, a solicitor may be employed and his bill of

costs, which should include advocates fees subject to the restrictions laid down in clause (b) above shall be submitted to the Central Government Advocate and his certificate obtained that the amount of the bill is reasonable before it is submitted for the orders of the Government.

(f) When advocate is rightly provided for the defence of an enrolled person at the first trial in a criminal court, counsel can also be provided when considered necessary on appeal, subject to the limitation laid down in clauses (b) and (d) above.

46. Procedure for defence of officers.—When an officer is to be tried by a criminal court upon any criminal charge and the defence of the officer is considered desirable the case shall be reported to the Director-General for obtaining the orders of the Government thereon.

47. Engagement of Counsel for Prosecution in Coast Guard Courts.—If the Director-General or Regional Commander, who convenes a Coast Guard Court consider it necessary to engage a counsel for prosecution of an accused, a suitable counsel shall be appointed as per rules 41 to 46.

CHAPTER VI SERVICE PRIVILEGES

48. Immunity from attachment.—The arms, clothes, equipment, accoutrements or necessaries of any person in the Coast Guard service, while subject to the Act, shall not be seized, nor shall the pay and allowances or any part thereof of such person be attached under any process or direction issued, or by the authority of, any court or public servant in respect of any claim, decree or order enforceable against him.

49. Immunity from arrest for debt.—(1) No person in the Coast Guard Service, shall so long as he is subject to the Act, be liable to be arrested for debt under any process or direction issued by, or by the authority of, any court or public servant.

(2) If any such person is arrested in contravention of the provisions of sub-rule (1), the court or public servant by whom or by whose authority such process or direction was issued shall on complaint by the person arrested or by his superior officers enquire into the case and if satisfied that the arrest was made in contravention of sub-rule (1) shall make an order for immediate discharge of the person arrested and may award to the complainant the costs of the complaint to be recoverable in the same manner as if such costs were awarded to him by a decree against the person at whose instance such process or direction was issued.

(3) No court fee shall be payable on a complaint made under sub-rule (2) or for recovery of the costs that may be awarded under that sub rule.

50. Immunity of persons attending Coast Guard Court from arrest.—(1) No presiding officer or other member of the Coast Guard Court, no Law Officer, no party to any proceedings before a Coast Guard Court or no advocate or agent of such party,

and no witness acting in obedience to a summons to attend a Coast Guard Court shall, while proceeding to, attending or returning from, a Coast Guard Court, be liable to arrest under any civil or revenue process.

(2) If any such person is arrested under any such process, he may be discharged by order of the Coast Guard Court.

51. Priority for hearing of cases concerning persons in the Coast Guard Service.—(1) On the presentation to any civil or criminal or revenue court, by or on behalf of any person in the Coast Guard Service while subject to the Act of a certificate from the proper Coast Guard authority of leave of absence having been granted to or applied for by him for the purpose of prosecuting or defending any suit or other proceedings in such court, the court shall, on the application of such person, arrange, so far as may be possible for the hearing and final disposal of such suit, or other proceeding within the period of the leave granted or applied for.

(2) The certificate from the proper Coast Guard authority shall state the first and the last day of the leave granted or applied for and set forth a description of the case with respect to which the leave has been granted or applied for and shall be duly signed and authenticated by such authority.

(3) No fee shall be payable to the court in respect of the presentation of any such certificate, or in respect of any application by or on behalf of any such person for priority for the hearing of his case and every such certificate shall be conclusive evidence of the correctness of the contents thereof.

(4) Where the court is unable to arrange for the hearing and final disposal of the suit or other proceeding within the period of the leave granted or applied for as aforesaid, it shall record its reasons for having been unable to do so, and shall cause a copy thereof to be furnished to such person on his application without any payment whatever by him in respect either of the application for such copy or of the copy itself.

52. Right of the Director-General or Commanding Officer to obtain copies of judgement or orders made by a criminal court.—A criminal court before which any proceedings have been taken against a person in the Coast Guard Service whilst subject to the Act shall, on application by the Director-General or the Commanding Officer of the person, grant copies of the judgement and final orders in the case free of cost and without delay.

CHAPTER VII DEDUCTION FROM PAY AND ALLOWANCES

53. Deduction from pay etc. not to be made unless authorised.—No deduction other than those authorised by these rules shall be made from the pay, pension, gratuities, allowances and other benefits due to officers and enrolled persons of the Coast Guard.

54. Deduction from pay and allowances.—The following deductions may be made from the pay and allowances of a person subject to the Act without recourse to trial by a Coast Guard Court or by the Commanding Officer, namely :—

(1) All pay and allowances for every day of absence without leave unless an explanation is given to the satisfaction of his Commanding Officer for such absence and approved by Director-General in the case of officers and others by the Deputy Inspector-General under whom the enrolled person is serving.

Provided that the person is not dealt with by a Coast Guard Court or by the Commanding Officer of the person for the said absence.

(2) All pay and allowances for every day while he is in civil, criminal or Coast Guard custody on a charge for an offence of which he is afterwards convicted by a Commanding Officer or Coast Guard Court or criminal court and sentenced to imprisonment or detention.

(3) All pay and allowances for every day while he is in hospital on account of sickness certified by the Commanding Officer or the Medical Officer-in-Charge of the hospital where the individual was hospitalised to have been caused by an act amounting to an offence punishable under the Act :

Provided that such certificate is accepted by the Director-General in the case of Officers and by the Deputy Director-General in the case of enrolled persons.

(4) Any sum required to make good the pay and allowances of any person subject to the Act which he has unlawfully retained or refused to pay.

(5) Any sum required to make good any loss, tenance of his wife or legitimate or illegitimate or property belonging to a Coast Guard or Defence Services, mess, band or institution which after due investigation appears to the Central Government or the Director-General to have been occasioned by the wrongful act or negligence on the part of the person.

(6) Any sum required to be paid for the maintenance of his wife or legitimate or illegitimate children under the provisions of rule 56.

(7) Any sum which after due investigation appears to the Director-General or the Deputy Director-General under whom the person is serving to be due to a Coast Guard or Defence Services mess, canteen, or any other institution.

55. Deductions awarded by Coast Guard Courts and other authorities.—Deductions may be made from the pay and allowances of a person subject to the Act in respect of any sentence of fine, forfeiture or mulcts of pay and allowances awarded in pursuance of the Act by a Coast Guard Court or by the Commanding Officer.

56. Liability for maintenance of wife and children.—(1) A person subject to the Act shall be liable to maintain his wife and his legitimate or illegitimate children to the same extent as if he were

not so subject ; but the execution or enforcement of any decree or order for maintenance passed or made against such person shall not be directed against his person, pay, arms, ammunition, equipment, instruments or clothing.

(2) Notwithstanding anything contained in sub-rule (1) :—

(a) where it appears to the satisfaction of the Central Government or the Director-General that a person subject to the Act without reasonable cause deserted or left in destitute circumstances his wife or legitimate children unable to maintain themselves or has by reason of contracting a second marriage become liable to provide separate maintenance to his first wife, or

(b) Where any decree or order is passed under any law against a person who is, or subsequently becomes, subject to the Act for the maintenance of his wife or his legitimate or illegitimate children and a copy of the decree or order is sent to the Central Government or the Director-General ;

The Central Government or the Director-General may direct a portion of the pay of the person subject to the Act to be deducted from such pay and appropriated in the manner as decided by the Director-General towards the maintenance of wife or children, but the amount deducted shall not exceed the amount fixed by the decree or order, if any :

Provided that in the case of a decree or order for maintenance referred to in sub-rule 2 no deduction from pay shall be directed unless the Central Government or the Director-General is satisfied that the person against whom such decree or order has been passed or made, has had a reasonable opportunity of appearing or has actually appeared either in person or through a duly appointed legal practitioner, to defend the case before the court by which the decree or order was passed or made.

(3) Where arrears of maintenance under a decree or order referred to in sub-rule (2) have accumulated while the person against whom the decree or order has been made is subject to the Act whether or not deductions in respect thereof have been made from his pay under this section, no step for the recovery of these arrears shall be taken in any court after such person has ceased to be so subject unless the court is satisfied that he has, since he ceased to be subject to the Act, the ability to pay the arrears or part thereof and has failed to do so.

(4) Notwithstanding anything contained in any other law, where a proceeding for obtaining a decree or order for maintenance is started against a person subject to the Act the court may send the process for service on that person to the Commanding Officer of such person provided that such service shall not be valid unless there is sent alongwith the process such sum of money as may be prescribed to enable that person to attend the hearing of the proceeding and to return to his ship after such attendance.

(5) If a decree or order is passed or made in the proceeding against the person on whom the process

1. served, the sum sent alongwith the process shall be awarded as costs of the proceeding against that person.

(6) No process in any proceeding under this rule shall be valid against a person subject to the Act if served on him after he is under orders for service at a foreign station or beyond Indian waters.

(7) The production of a certificate of the receipt of the process purporting to be signed by such Commanding Officer as aforesaid shall be evidence that the process has been duly served, unless the contrary is proved.

(8) Whereby a decree or order, a copy whereof has been sent to the Central Government of the Director-General under sub-rule (2) the person against whom the decree or order has been passed or made is directed to pay as costs any sum sent alongwith with the process, the Central Government may pay to the person entitled an amount in full satisfaction of that sum and the amount so paid by the Central Government shall be deemed to be a public demand recoverable from the person against whom the decree or order has been passed or made, and without prejudice to any other mode of recovery, may be recoverable by deduction from his pay, in addition to the deduction authorised by sub-rule (2).

(Please see rule 34)

Monthly return of Good Conduct Badges, awarded, restored or deprived

Details of service.

Coast Guard Strip
Date of Good Conduct Badge.

Date

Personal number	Name	Rank	Date of birth	Date when first ranked	Date of attaining badge rank	Allowed to count	Not allowed to count	Date of commencement of "Very Good" conduct	Number of Good Conduct Badges previously awarded	Date of award of last Good Conduct Badge	Date of deprivation of last Good Conduct Badge	Awarded	Restored	Deprived and No. of warrant	Remarks
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16